04 - राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की शिक्षा दृष्टि से उपजे सवाल

05 - सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के आनंदमय पल

06- बैतूल में मेडिकल कॉलेज खोलने की प्रक्रिया शुरु

07- क्यों कुपोषित रह जाती हैं स्लम बस्तियों की महिलाएं ?

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 312 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

नीट पेपर लीक केस : यह मंत्री व सरकार के लिए परीक्षा !

अरविंद मोहन

मेडिकल प्रवेश परीक्षा का मामला इस बार जहां पहुंचा है उसमें साफ़ लगता है कि देश भर के बच्चे और अभिभावक तथा सुप्रीम कोर्ट इसे किसी साफ़ नतीजे तक पहुँचाए बगैर नहीं रहेगा। अदालत अब राज्यों में दर्ज मामलों को भी अपने पास लेकर एक साथ सुनवाई और फ़ैसला करना चाहती है। इस मामले ने निश्चित रूप से राजनैतिक रंग भी लिया है और यह कहने में भी हर्ज नहीं है कि कोई साफ़ और सर्वमान्य फ़ैसला होने में देरी के साथ ही मामले के राजनीतिकरण की गुंजाइश बढ़ती जाएगी। यह बात अदालत भी जानती होगी, लेकिन वह एक बार में अपनी शक्ति का उपयोग करके अफरा-तफरी मचाना नहीं चाहती होगी। सो उसने इस तरह के सवाल इस परीक्षा का संचालन करने वाली नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) और सरकार के सामने रखे और यह प्रयास भी किया कि सारे बच्चों को दोबारा परीक्षा में बैठाने या व्यवस्था को ज्यादा परेशान किए बिना कुछ 'लोकल ऑपरेशन' से बीमारी ठीक हो जाए तो वह भी किया जाए। पहले उसने काउंसलिंग रोकने पर बंदिश नहीं लगाने का फैसला दिया था। पर इन सारी कोशिशों में चालीस दिन से ज्यादा का कीमती समय निकल चुका है। क़ीमती इसलिए कि अब तक बच्चों की काउंसलिंग और नामांकन का काम पूरा हो चुका होता और कई जगह पढ़ाई भी शुरू हो जाती।

देरी की शुद्ध वजह केंद्र सरकार और उसकी इस एजेंसी एनटीए द्वारा की जा रही शरारतें हैं। क्योंकि इन दोनों का व्यवहार ऐसा है जैसे इनको पता ही नहीं है कि पेपर लीक हुआ और परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। पेपर लीक की कथा तो परीक्षा की तारीख से पहले ही शुरू हुई और दिन ब दिन नए साक्ष्य और अपराधी सामने आते जाने से इसकी व्यापकता, भयावहता और इसमें शामिल लोगों की ताकत का रहस्य खुलता जा रहा है।

जब लीक कराने के खेल के छुटभैये पोस्ट डेटेड चेक से भुगतान लेने जैसे व्यवहार चला रहे थे तब उनकी पहुँच, दुस्साहस और ऊपर से कनेक्शन के बारे में सहज ही सोचा जा सकता है। यह तो भला हो बिहार पुलिस के एक जुनूनी अधिकारी का जिसने जान जोखिम में डालकर इस पूरे षड्यंत्रकारी नेटवर्क को नंगा दिखाने की शुरुआत की। और हम देख रहे हैं कि रोज नई गिरफ्तारियां हो रही हैं और रोज नए साक्ष्य मिल रहे हैं। अभी ही जो तस्वीर उभर रही है वह कई-कई राज्यों में पचास से सौ करोड़ रुपए तक की लेन-देन की ओर इशारा करते हैं। और यह संबंधों या विचारधारा के आधार पर कुछ बच्चे-बच्चियों को 'फ़ेवर' करने की जगह एक धंधे के रूप में, वार्षिक कमाई के अवसर के रूप में सामने आ चुका है।

और जिस तरह से सरकार, मानव संसाधन मंत्री और एनटीए ने पहले दिन से इस मामले में आचरण किया है वह बताता है कि वे न तो इस मामले में दोषियों के खिलाफ कार्रवाई चाहते हैं, न अपना दोष या चूक मानने को तैयार हैं और ना ही आगे से ऐसी गलती न हो इसका इंतजाम करना चाहते हैं। मंत्री महोदय तो पहले दिन से पेपर लीक न होने का तमगा बांटने में लग गए थे। जो एकमात्र कार्रवाई हुई है वह एनटीए के प्रमुख का तबादला है-उनको भी किसी तरह की सजा नहीं मिली है। ये वही सज्जन हैं जिन्हें मध्य प्रदेश में व्यापमं करवाने का अनुभव है और आज भी उस मामले में कुछ नहीं हुआ है, जबकि उसे सामने लाने वाले कितने ही लोग मारे जा चुके हैं। जब मंत्री जी पेपर लीक मानने लगे तो उनका मंत्रालय और एनटीए इसे सीमित लीक बताने में लगा है। अदालत में सरकार और एनटीए की तरफ से दी जाने वाली दलीलें उनकी मंशा का सबसे अच्छा प्रमाण हैं। सारी कोशिश मामले को ढकने और रफा दफा करने की लगती है।

पर जैसा कहा गया है ऐसा हो पाना अब असंभव है। और यह बोलने में भी हर्ज नहीं रही कि अब 24 लाख विद्यार्थियों और आगे के वर्षों में परीक्षा देने वाले बच्चे-बच्चियों की परीक्षा तो ली ही जाएगी, धर्मेन्द्र प्रधान और नरेंद्र मोदी सरकार की परीक्षा अभी से शुरू हो चली है। और जितना वक्त बीत रहा है उनकी परीक्षा और मुश्किल होती जा रही है।

अभी अदालत तो सुनवाई करके जल्दी फैसला देगी, क्योंकि उसे बच्चों के एकेडमिक साल की चिंता है और अगर दोबारा परीक्षा कराने का आदेश हुआ तो यह लगभग एक सेमेस्टर का वक्त बर्बाद करेगा। दूसरा उपाय अब दिखता भी नहीं। और सरकार की चले तो उसकी जांच और सुझाव का दौर खिंचता जाएगा और विद्यार्थी तथा उनके मां-बाप थक हारकर चुप बैठ जाएंगे। पर मामला ऐसा है और इसमें इन 24 लाख परिवारों का ही नहीं आगे बैठने वाले बच्चों का भी इतना कुछ दांव पर लगा है कि वे चुप नहीं बैठ पाएंगे। और सरकार अपनी तरफ से जो भी दांव-पेंच चलेगी, उनका सरकार की मंशा पर शक बढ़ता जाएगा। यह स्थिति प्रधान और मोदी जी के लिए ज्यादा महंगी साबित होगी।

एक चिंता तो अभी की गलती मानना, उसका निदान करना और दोषियों को सजा देना है। मामला जहां तक पहुंचा है उसमें उसे नतीजे तक जाने से रोकना किसी के वश में नहीं है। अगर मंत्री जी की नाक के नीचे यह सब चलता रहा (क्योंकि पिछली दफे भी वही मंत्री थे) और उनको पता नहीं था या उनकी भागीदारी थी तो क्या सजा होनी चाहिए यह वही तय करें। लेकिन ज्यादा बड़ी चिंता आगे से फुलप्रूफ़ परीक्षा व्यवस्था बनाने की है। उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों ने पेपर लीक पर सख्त सजा के प्रावधान के कानून बनाए हैं। पर लीक रोकना पहली ज़रूरत है। और उसके लिए चीन जैसे देशों की परीक्षा व्यवस्था से सीखना हो तो वह भी किया जा सकता है। उससे ज्यादा अच्छी चीज परीक्षा को विकेंद्रित करना होगा। हर राज्य एक तारीख और एक पाठ्यक्रम के आधार पर प्रवेश परीक्षा कराए। एक हद तक पाठ्यक्रम में भी विविधता मानी जा सकती है। या फिर सात चरण के चुनाव की तरह परीक्षा को भी फेज के हिसाब से किया जाए। तकनीक और कंप्यूटर के बेहतर इस्तेमाल की भी सोची जा सकती है। दुखद यह है कि धड़ाधड़ पेपर लीक और परीक्षा कैंसिल होने के बीच भी इस पक्ष की चर्चा लगभग गायब है। और नीट-24 में अगर सरकार और मंत्री जी की परीक्षा हो रही है तो इस प्रसंग में तो पूरा पढ़ने-लिखने वाला समाज ही परीक्षा दे रहा है और उसकी तरफ़ से कोई जबाब नहीं आ रहा है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

उ.प्र. में डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस पटरी से उतरी

चार की मौत, 2 यात्रियों के पैर कटे, 20 से ज्यादा घायल

● बोगियां बिखरीं, शीशे तोड़कर बाहर निकले लोग, चारपाई पर ले गए अस्पताल ● एक्सीडेंट के पहले ड्राइवर ने सुनी धमाके की आवाज ● मृतकों के पीड़ितों को 10-10 लाख का मुआवजा

लखनऊ/गोंडा (एजेंसी)। यूपी के गोंडा में चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस की 3 एसी समेत 12 बोगियां पटरी से उतर गईं। इनमें 3 पलटी खा गईं। हादसे में 4 यात्रियों की मौत हो गई, 20 घायल हैं। हालांकि पहले 5 यात्रियों की मौत की बात सामने आई थी। 2 यात्रियों के पैर कट गए। एसडीएम मनकापुर ने इसकी पुष्टि की है। ज्यादातर घायल यात्री एसी कोच के बताए जा रहे हैं। हादसे के बाद यात्री खिड़की के कांच तोड़कर बाहर कूदे।

हादसे की सूचना मिलते ही रेलवे अफसर मौके पर पहुंच गए। रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू हो गया। ट्रेन ((15904) चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही थी। हादसा झिलाही रेलवे स्टेशन के बीच गोसाई डिहवा में हुआ है। अयोध्या से इसकी दूरी 30 किमी, जबकि लखनऊ से 130 किमी है। सीएम योगी और रेल मंत्री ने स्थिति का जायजा लिया। रेल हादसे पर पीएम, राष्ट्रपति समेत विपक्ष के नेता गहरा दुख व्यक्त किया। गुरुवार को यह ट्रेन रात 11.39 बजे चंडीगढ़ से रवाना हुई। गुरुवार दोपहर झिलाही स्टेशन के पास पलट गई। ट्रेन में सवार एक यात्री ने कहा-गोंडा से 20 किमी दूर करीब ढाई बजे हादसा हुआ। यहां से मनकापुर स्टेशन 5 किमी दूर है।

खड़गे बोले-

पीएम और रेल मंत्री हादसे की जिम्मेदारी लें- कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- यह हादसा एक उदाहरण है कि किस तरह से मोदी सरकार ने रेल सुरक्षा को खतरे में डाला है। एक महीने पहले 11 लोग की मौत हो गई थी, जब कंचनजंघा एक्सप्रेस की मालगाड़ी से टक्कर हुई थी। रेलवे कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट में सिग्नल फेल होना, ऑपरेशन में कई स्तर की गड़बड़ी को हादसे का कारण बताया था। पीएम नरेंद्र मोदी और उनके रेल मंत्री अपनी पब्लिसिटी के किसी भी मौके को नहीं छोड़ते हैं। उनको सीधे तौर इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। हमारी एक ही मांग है कि एंटी कोलिजन डिवाइस-कवच को देशभर में रेलवे रूट में लगाया जाना चाहिए।

मोहन कैबिनेट मीटिंग में लिए गए महत्वपूर्ण फैसले

संवेदनशील डाटा को सुरक्षित रखने के लिए कमेटी बनेगी, बैकलॉग पदों पर नियुक्तियां होंगी

भोपाल (नप्र)। सीएम डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई। मंत्रालय में हुई बैठक में कई अहम प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। मीटिंग से पहले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजस्व महा अभियान 2.0 का डिजिटल शुभारंभ किया। भू-स्वामियों के हित में त्वरित और आसान सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए यह अभियान 31 अगस्त तक जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा, हमारी संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व आदिकाल से रहा है। इस वर्ष 21 जुलाई को आने वाली गुरु पूर्णिमा प्रदेश में श्रद्धा के साथ मनाई जाएगी। इस संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग तथा उच्च शिक्षा विभाग द्वारा विशेष रूप से सर्कुलर जारी किया गया है। सभी मंत्री अपने-अपने क्षेत्र में होने वाले कार्यक्रमों में शामिल हो। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने मंत्री परिषद की बैठक से पहले राजस्व महा अभियान 2.0 का डिजिटल शुभारंभ किया।

कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने मीटिंग के संबंध में बताया कि बैंकों की गाड़ियों में नगद रुपयों का ट्रांसजेक्शन होता है। भारत सरकार ने एक्ट बनाया है। उसके कुछ नियम है। निजी सुरक्षा एजेंसी काम करती है। इसे लेकर राज्य सरकार ने भी जरूरी प्रावधान किए हैं। इससे नगद राशि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने समेत अन्य मापदंड किए गए हैं। निजी सुरक्षा नियम 2024 की आज अधिसूचना जारी की गई है। निजी सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी कड़े नियम लागू होंगे। इन एजेंसियों में कौन काम कर रहा है। उसका बैकग्राउंड क्या है? आदि के बारे में बताना होगा।

एक साल में ज्यादा से ज्यादा भरे जाएंगे बैकलॉग पद

मंत्री विजयवर्गीय ने बताया, बैकलॉग के 17 हजार पदों में से 7 हजार पद भरे हैं। 10 हजार पद अभी भी खाली है। 1 साल में ज्यादा से ज्यादा योग्य उम्मीदवारों से पद भरे जाएंगे।

सुप्रभात

नंगा नाच सियासत का
कवि देख रहे हो न
ख़स्ता हाल शराफ़त का
कवि देख रहे हो न।
'धर्मध्वजी' तक गए
महल में धर्मध्वजा लेकर
ऐसा जलवा दौलत का
कवि देख रहे हो न।
टीवी पर होती हैं बहसें
पैसे को लेकर
यह अपमान शहादत का
कवि देख रहे हो न।
कहीं किसीके मिट
जाने की करते लोग दुआ
यह भी दौर इबादत का
कवि देख रहे हो न।
खून पसीने से पुरखों के
युग युग गढ़ी गयी
ढहते उसी इमारत को
कवि देख रहे हो न।
शाम ढले ढल फिर न
उगेगा कुछ कोई कर ले
चढ़ता सूरज शोहरत का
कवि देख रहे हो न।
दुनियाभर भर में
क़त्लो-गारत और मारामारी
खेल घिनौना नफ़रत
कवि देख रहे हो न।

- दिनेश मालवीय 'अश्क'

टिप्पणी

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भाजपा नेताओं को कांग्रेसी घुसपैठ रास नहीं आ रही

भाजपा में इन दिनों अंदर और बाहर के तापमान में बहुत अंतर है। देखने में बाहर सब कुछ सामान्य लग रहा, पर अंदर कई नेताओं ने नाराजगी का ख़म ठोंक रखा। उनकी ये नाराजगी अंदर ही नहीं रही। वे कांग्रेस के उन घुसपैठिए नेताओं को मंत्री बनाए जाने से गुस्से में हैं। जिन तीन कांग्रेस विधायकों को भाजपा में लाकर पदों से नवाजा जा रहा है, उसके पीछे का कारण उन्हें समझ नहीं आ रहा! आखिर रामनिवास रावत को मंत्री बनाने के क्या मज़बूरी थी, इसका जवाब नहीं मिल रहा।

कांग्रेस से आए रामनिवास रावत को मंत्री बनाया जाना भाजपा के बड़े नेताओं को रास नहीं आ रहा। इस कारण प्रदेश भाजपा में सब कुछ सामान्य नहीं है। सिंधिया प्रसंग को तो भाजपा में इसलिए स्वीकार लिया गया था, कि वो कांग्रेस की सरकार गिरा कर अपनी पार्टी की सरकार बनाने का मामला था। लेकिन, रामनिवास रावत, कमलेश शाह और निर्मला सप्रे को जिस तरह शर्तें मानकर भाजपा में लिया गया, वो पार्टी के कई सीनियर विधायकों और नेताओं को रास नहीं आ रहा। कुछ नेताओं की नाराजगी खुलकर सामने आ रही। वे इसे सही नहीं मान रहे और ये सवाल खड़ा कर रहे हैं कि आखिर इन तीन विधायकों को भाजपा में लेने के पीछे क्या मज़बूरी थी! क्यों इन्हें इनकी शर्तों पर पार्टी में लिया गया। बात सही इसलिए भी है, कि न तो सरकार पर कोई खतरा था और न इनके भाजपा में आने से प्रतिष्ठा बढ़ने जैसी कोई बात समझ में आती है।

भाजपा नेताओं की नाराजी खुलकर भी सामने आई और दबकर भी। लेकिन, पार्टी का बड़ा तबका नेतृत्व की इस प्रवृत्ति से खुश नहीं है। इससे उन्हें अपने हक़ पर खतरा मंडराता नजर आने लगा, जो स्वाभाविक भी है। सिंधिया के साथ आए 22 लोगों में चार अभी भी मंत्रिमंडल का हिस्सा है। पिछले मंत्रिमंडल में इनकी संख्या 7 थी। तोड़फोड़ से पार्टी को भले तात्कालिक फ़ायदा होता हो, पर इससे पार्टी के अंदर विद्रोह जैसे हालात बनते हैं। इससे पार्टी संगठन और बड़े नेता भी अनजान नहीं है। उन्हें पता है कि पार्टी में कैसा विरोध पनप रहा है। किंतु, इस नाराजगी को दूर करने के लिए क्या पार्टी ने कोई रास्ता खोजा? अभी इस सवाल का जवाब सामने आना बाकी है। लेकिन, यह बात जरूर सामने आई कि इन नाराज विधायकों को मंत्रिमंडल और निगम-मंडलों में नई जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है! लेकिन, ये कब और कैसे होगा, ये यक्ष प्रश्न है जिसका जवाब आना बाकी है।

मध्यप्रदेश भाजपा में तोड़फोड़ की राजनीति से पार्टी के नेता ऊब गए हैं। यही कारण है कि अब पार्टी के अंदर नाराजगी विद्रोह की भाषा में बदलने लगी। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए रामनिवास रावत को मंत्री बनाने से पार्टी के वरिष्ठ नेता खुलकर सामने आए। क्योंकि, मंत्रिमंडल विस्तार का सारा तामझाम अकेले रावत के लिए किया गया। इस पर पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव और अजय विश्नोई

ने तो खुलकर अपनी नाराजगी व्यक्त की। इसलिए कि कांग्रेस के दूसरे विद्रोही और अमरवाड़ा से जीते कमलेश शाह भी मंत्री बनने की कतार में है। भाजपा में नाराजगी जताने वाले ये वे नेता हैं, जो सालों से राजनीति कर रहे हैं। वे मुखर भी हैं और खुलकर बोलने का मौका नहीं छोड़ते। लेकिन, ऐसे कई नेता जो चुप हैं पर अंदर ही अंदर उनका गुस्सा खदबदा रहा है। पूर्व मंत्री जयंत मलैया और ओमप्रकाश सकलेचा ने तो साफ़ कहा कि वे पार्टी में अपनी बात रखेंगे। आशय है कि वे भी इससे खुश नहीं हैं। सबका एक ही सवाल है कि आखिर कांग्रेस के इन तीन नेताओं को समझौते के तहत पार्टी में शामिल कराने के पीछे पार्टी की क्या मज़बूरी थी!

इससे पहले 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ जो नेता भाजपा में शामिल हुए थे, तब उन्हें मंत्री और राज्यमंत्री बनाया गया। जो उपचुनाव हार गए उन्हें समझौते के तहत निगम-मंडल की कमान सौंपी गई थी। तब भी पार्टी के नेताओं ने नाराजगी दिखाई थी। लेकिन, तब के हालात अलग थे। वो माहौल कमलनाथ की सरकार के समय का था और सारी जुगत कांग्रेस की सरकार गिराने के लिए की गई थी। इसलिए भाजपा के नेताओं ने कलेजे पर पत्थर रखकर सहन कर लिया। लेकिन, रामनिवास रावत, कमलेश शाह और निर्मला सप्रे को लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा में लाने से क्या हासिल हुआ! रावत को बिना उप चुनाव जीते मंत्री बना दिया गया। जबकि,कमलेश शाह तो चुनाव जीत गए और उन्हें भी मंत्री बनाया जाना है। निर्मला सप्रे से भाजपा का क्या करार हुआ ये अभी सामने नहीं आया!

अजय विश्नोई ने सही कहा कि 'वो' (यानी कांग्रेस से भाजपा में आने वाले) शर्तों के साथ ही भाजपा में शामिल होते हैं, हम तो समर्पण भाव से काम करने वाले नेता हैं। त्याग अपनों से करवाया जाता है, दूसरा तो शर्तों के साथ आया। पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव का कहना है कि ये पार्टी का फैसला है। वे खुलकर बोलते हैं, तो उनका नुकसान हो जाता है। यही वजह है कि पार्टी के दूसरे नाराज नेता भी खुलकर बोलने से हिचकिचा रहे हैं। इन नेताओं का कहना है कि सरकार बनाने या बचाने की मजबूरी तो नहीं थी, तब क्यों रामनिवास रावत को मंत्री बनाया गया! अजय विश्नोई जैसे सीनियर विधायक प्रतिक्रिया तो दे रहे हैं, पर वे भी पार्टी के फैसले की आड़ लेकर तंज भी कस रहे हैं। विश्नोई का यह भी कहना है कि पार्टी ने रावत को मंत्री बनाकर इनाम दिया है। शायद पार्टी ने उनकी उपयोगिता को समझा होगा।

कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया लगातार 9 बार से चुनाव जीते विधायक गोपाल भार्गव की भी सुनाई दी। उनका बयान सामने आया कि भाजपा में मंत्री बनाने का निर्णय शीर्ष नेतृत्व तय करता है। अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि मैं 15000 दिन से विधायक हूं, पता नहीं रावत को किस मजबूरी में मंत्री बनाया। गोपाल भार्गव कई बार मंत्री रहे, पर इस बार उनको मौका नहीं मिला। उनकी भाषा से अंदाजा लगता है कि वे संभलकर बोलने में ही अपनी भलाई समझ रहे हैं। कहना तो वे बहुत कुछ चाहते होंगे, पर पार्टी लाइन भी नहीं छोड़ना चाहते। दो दशक तक मंत्री रहे जयंत मलैया भी पार्टी से बंधे हैं। भाजपा विधायक ओमप्रकाश सकलेचा का बयान सामने आया कि किसे मंत्री बनाना है और किसे नहीं, ये मुख्यमंत्री का विशेषाधिकार है।

ऐसे में पार्टी भले ही सबकुछ ठीक कहे, पर वास्तव में ऐसा है नहीं! पैराशूट नेताओं को कुर्सी दिए जाने से भाजपा के वे नेता तो नाराज हैं ही जिनका पार्टी के इस फैसले से नुकसान हुआ है। प्रदेश की नई सरकार में पुराने नेताओं को हाशिए पर छोड़ देने के पीछे समझा जा रहा है कि पार्टी पुरानी पीढ़ी को विदा कर नई पीढ़ी को आगे लाने की परंपरा निभा रही है। लेकिन, रामनिवास रावत की उम्र के नेताओं को भाजपा में लाकर मंत्री बनाने को लेकर पनप रही नाराजगी सब चुप क्यों हैं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5 °c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 19 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

बिहार में जहरीली गैस से चार लोगों की मौत, मोतिहारी में हादसे के बाद भारी बवाल

पटना (एजेंसी)। बिहार के मोतिहारी में बड़ा हादसा हुआ है। चार लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि नव निर्मित टॉयलेट टैंक का सेंट्रिंग खोलने के दौरान टैंक में से निकली जहरीली गैस से चार लोगों की दम घुटने से

मौत हो गई। कई लोग बेहोश हो गए हैं। इसके बाद बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई है। स्थानीय लोगों ने सभी को आनन-फानन में अनुमंडलीय अस्पताल लेकर गए। वहां पर इलाज की समुचित व्यवस्था नहीं होने पर लोगों का आक्रोश भड़क गया। गुस्साए लोगों ने अस्पताल में ही तोड़फोड़ शुरू कर दी। अस्पताल के बाहर शव को रखकर हंगामा करने लगे।

जम्मू-कश्मीर में 3 जगह एनकाउंटर, कुपवाड़ा में 2 आतंकी ढेर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा के केरन इलाके में सेना ने एनकाउंटर में 2 आतंकियों को मार गिराया है। सेना को यहां कुछ आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी, जिसके बाद सर्च ऑपरेशन चलाया गया।

इसी दौरान आतंकियों-सेना के बीच मुठभेड़ शुरू हुई, जो अभी भी जारी है।
उधर, डोडा में भी दो जगह इनकाउंटर चल रहा है। गुरुवार तड़के आतंकवादियों के हमले में दो सैनिक घायल हो गए। सेना के अधिकारियों ने बताया कि कास्तीगढ़ इलाके के जद्दन बाटा गांव में बुधवार देर रात स्कूल में बने अस्थायी सुरक्षा शिविर पर आतंकियों ने गोलीबारी की। इसमें दो जवान घायल हुए।

हापुड़ में पुलिस-मेडिकल कॉलेज में टकराव

- एसपी-एएसपी के बाद इंस्पेक्टर को भी हटाया

गाजियाबाद (एजेंसी)। हापुड़ के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में पुलिस और डायरेक्टर के बीच का विवाद सुर्खियों में है। एसपी और एएसपी का ट्रांसफर पहले हो चुका है। अब इंस्पेक्टर को भी हटाया गया है। सीओ पर भी एक्शन

होना लगभग तय है। चर्चा है कि रामा मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर के कहने पर एसपी अभिषेक वर्मा का तबादला किया गया। मेडिकल कॉलेज में भर्ती एक महिला ने पुलिस से इलाज ठीक से नहीं होने की शिकायत की। मरीज की कॉल पर पुलिस पहुंची तो स्टाफ ने बदसलूकी की। इस पर एसपी ने मेडिकल कॉलेज डायरेक्टर को हिरासत में लेने के लिए अस्पताल में 50 पुलिसकर्मी भेज दिए।

गुजरात में चांदीपुरा वायरस, 4 और बच्चों की जान गई

मौतों की संख्या 19 हुई, अब तक 31 मामले दर्ज, 5 बच्चों का इलाज जारी

राजकोट (एजेंसी)। गुजरात में चांदीपुरा वायरस से संक्रमित मरीजों के मामले बढ़ते जा रहे हैं। गुरुवार (18 जुलाई) को राजकोट में 3 और पंचमहल जिले में 1 बच्चे की मौत हो गई। इससे मरने वालों की संख्या बढ़कर 19 हो गई है। राज्य में अभी तक चांदीपुरा वायरस के 31 संदिग्ध केस सामने आए है, जिसमें से 5 बच्चों का इलाज चल रहा है।

- **सीएम भूपेंद्र पटेल ने बुलाई आपात बैठक-** मामले की गंभीरता को देखते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार दोपहर को आपात बैठक बुलाई। उन्होंने राज्य में चांदीपुरा वायरस की स्थिति और महामारी को नियंत्रित करने के लिए किए गए उपायों की जानकारी भी ली। स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेश पटेल और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में हुई इस बैठक में जिला कलेक्टरों और जिला विकास अधिकारियों के साथ-साथ मुख्य जिला स्वास्थ्य अधिकारी भी मौजूद रहे।
- **राजकोट जिले में अब तक 5 बच्चों की मौत-** राजकोट जिले में ही अब तक 5 संदिग्ध मरीजों की मौत हो चुकी है। इसमे मोरबी की राशि प्रदीप सहरिया को 12 जुलाई को राजकोट सिविल में भर्ती कराया गया था, जिसकी 14 जुलाई को मौत हो गई। पडधारी के हड़मतिया के 2 साल के प्रदीप गोविंदभाई राठौड़ को 9 जुलाई को भर्ती

कराया गया था और 15 जुलाई को उसकी मौत हो गई।

चांदीपुरा वायरस क्या है

इस वायरस का पहला मामला 1965 में महाराष्ट्र के नागपुर जिले के चांदीपुर में सामने आया था। इस वायरस से महाराष्ट्र, गुजरात और आंध्र प्रदेश के कुछ इलाके प्रभावित हुए थे। वायरस से रोगी मस्तिष्क ज्वर (एन्सेफेलाइटिस) का शिकार हो जाता है। वायरस मच्छरों और मक्खियों के काटने से फैलता है।
वायरस किसे संक्रमित कर सकता है- चांदीपुरा वायरस खासतौर पर बच्चों को अपना निशाना बनाता है। यह मुख्य रूप से 9 महीने से 14 साल के बच्चों को प्रभावित करता है। संक्रमण तब फैलता है, जब वायरस मक्खी या मच्छर के काटने पर उनके लार के जरिए रक्त तक पहुंच जाता है। इससे बच्चों के तेज बुखार और सिरदर्द होता है।

महिला उत्थान व सशक्तिकरण मंच की महिलाओं ने थाना प्रभारी को ज्ञापन देकर दंगा-फसाद कर सुंदर कांड में अवरोध करने वाले कांग्रेसियों पर कार्यवाही करने की मांग की

उमंग सिंघार और हेमंत कटारे को गिरफ्तार करने दिया ज्ञापन

महिलाओं ने लगाये नारे बलात्कारियों को गिरफ्तार करो, दिखायी तख्तियां

भोपाल। महिला उत्थान व सशक्तिकरण मंच की महिलाओं ने अशोका गार्डन थाना प्रभारी को ज्ञापन देकर सुन्दर कांड में अवरोध करने वाले कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह , जीतू पटवारी, उमंग सिंघार, हेमंत कटारे, आतिफ अकील, सचिन यादव, पीसी शर्मा, महेंद्र सिंह, राजकुमार पटेल,विभा पटेल एवं आरिफ मसूद व अन्य साथियों पर कार्यवाही करने व बलात्कार के आरोपी उमंग सिंघार व हेमंत कटारे को गिरफ्तार करने की मांग की। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह द्वारा सुंदरकांड का विरोध करने और थाने में बकरीद मनाने के बयान से भी हिन्दू समाज में जबरदस्त आक्रोश है।

महिला उत्थान व सशक्तिकरण मंच की महिलाओं ने अपने ज्ञापन में कहा कि वे अशोका गार्डन थाना प्रागंण स्थित मंदिर में सुंदर कांड का पाठ कर रही थीं तभी कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह , जीतू पटवारी, उमंग सिंघार, हेमंत कटारे, आतिफ अकील, सचिन यादव, पीसी शर्मा, महेंद्र सिंह, राजकुमार पटेल,विभा पटेल एवं आरिफ मसूद व अन्य साथियों ने थाने परिसर स्थित मंदिर में पहुँच कर दंगा-फसाद किया और सुंदर कांड के पाठ में अवरोध पैदा किया जिससे हम हिन्दू /धर्मावलम्बी की भावनाएं आहत हुई हैं।

महिला उत्थान व सशक्तिकरण मंच की महिलाओं ने अपने ज्ञापन में कहा कि उक्त कांग्रेस के नेताओं ने विधिविरुद्ध इकट्ठे होकर दंगा-फसाद कर धार्मिक भावनाओं को आहत किया है अतः उक्त कांग्रेसियों पर धारा 189 विधिविरुद्ध जमाव, 191 बलवा करना, 194 दंगा करना व 299 धार्मिक भावनाओं के तहत मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही करने की मांग की।

साथ ही महिलाओं ने बलात्कार के आरोपी उमंग सिंघार व हेमंत कटारे को गिरफ्तार करने की मांग करते हुए ज्ञापन दिया। उन्होंने कहा कि उमंग सिंघार और हेमंत कटारे महिलाओं का शोषण व उत्पीड़न करते हैं, वे महिलाओं को प्रताड़ित करते हैं। अनेक महिलाओं ने दोनों के खिलाफ थानों में मुक़दमे दर्ज करायें हैं। मंच की महिलाओं ने कहा कि हेमंत कटारे तो फरार चल रहे हैं। दोनों बलात्कारियों को तत्काल गिरफ्तार किया जाये। क्योंकि उनके खुलेआम घूमने से महिलाएं असुरक्षित महसूस कर रही हैं और पीड़ित महिलाएं भयभीत हैं। महिलाओं ने दोनों को गिरफ्तार करने के लिए तख्तियां भी दिखायीं जिन पर लिखा था उमंग सिंघार और हेमंत कटारे बलात्कारियों को गिरफ्तार करो। ज्ञापन देने वालों में सुषमा चौहान, राजरानी धाकड़, सुनीता सुड़ेले, अनीता सिंह, सरिता सिटोके, नेहा दुबे सहित सैकड़ों महिलाएं शामिल थीं।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश

नीट का रिजल्ट सिटी और सेंटर वाइज जारी हो

- एनटीए शनिवार दोपहर 12 बजे तक वेबसाइट पर अपलोड करे; अगली सुनवाई 22 जुलाई को

नईदिल्ली (एजेंसी)। नीट परीक्षा रद्द होगी या नहीं, इस पर सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को भी फैसला नहीं हो सका। कैंडिडेट्स को अभी और इंतजार करना होगा। आज भी 4 घंटे सुनवाई चली। इस दौरान अदालत ने एनटीए को निर्देश दिया कि वह सभी कैंडिडेट्स के रिजल्ट शनिवार दोपहर 12 बजे तक वेबसाइट पर अपलोड करे। रिजल्ट सेंटरवाइज और सिटीवाइज होना चाहिए।

कोर्ट ने कहा, रिजल्ट अपलोड करते वक्त उम्मीदवार की पहचान जाहिर ना की जाए। हम सोमवार, 22 जुलाई को सुबह 10.30 बजे अगली सुनवाई शुरू करेंगे। ताकि दोपहर तक हम निष्कर्ष निकाल सकें। हम बिहार पुलिस रिपोर्ट की एक कॉपी भी चाहते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में 18 जुलाई को तीसरी सुनवाई थी

नीट में गड़बड़ी से जुड़ी 40 याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को तीसरी सुनवाई थी। इससे पहले 8 जुलाई और फिर 11 जुलाई को हुई थी।

समग्र मराठी समाज ने निकाली दांडी यात्रा

भोपाल। समग्र मराठी समाज ने आषाढ़ एकादशी के अवसर पर परंपरागत रूप से दिंडी यात्रा का आयोजन किया। भोपाल में इस आयोजन का ये 15 वाँ वर्ष था । दिंडी यात्रा के प्रारंभ होते ही रिमझिम वर्षा शुरू हुई जो दांडी यात्रा के बढ़ने के साथ मूसलाधार वर्षा में परिवर्तित हो गई। लेकिन इस मूसलाधार बारिश ने भी विठ्ठल भक्तों का उत्साह प्रभावित नहीं किया बल्कि और बढ़ा दिया। इस वर्ष दिंडी यात्रा में श्रद्धालुओं की संख्या बारिश बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती चली गई। जो मंदिर में पहुंचने तक हजारों की संख्या में पहुंच गई। दिंडी यात्रा का मुख्य आकर्षण पालकी के साथ-साथ भगवान विठ्ठल और देवी रूख्माई का वेश धरकर चल रहे बालक और बालिकाएं रहे। इसके अलावा कुछ बच्चे विभिन्न संतों के वेशभूषाओं में एक वाहन पर सवार थे। इस वर्ष दिंडी यात्रा में महाराष्ट्र से विशेष रूप से वारकरी संप्रदाय के अभंगो के समय बजने वाली ताल और मृदंग मंगवाई गई थी, भगवा ध्वज भी विशेष रूप से पुणे से मंगवाए गए थे। पूरे रास्ते भर विठ्ठल भक्ति संकीर्तन करते हुए, नृत्य करते हुए चलते जा रहे थे । मार्ग के मध्य में वर्षा भी अपने चरम पर थी किंतु विठ्ठल भक्तों का उत्साह कम नहीं कर पाई। मंदिर में पहुंचने के बाद विठ्ठल नाम का गजर किया गया, महा आरती हुई और सभी उपस्थित श्रद्धालु भक्तों को फलाहारी का महाप्रसाद वितरण किया गया।

उ.प्र. में बारिश से 24 घंटे में 10 मौतें

- 20 जिलों में बाढ़, 60 गांव डूबे
- म.प्र.-राजस्थान समेत 17 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में नेपाल से सटे 20 जिलों में पिछले 4-5 दिनों से बाढ़ के हालात बने हुए हैं। करीब 20 लाख की आबादी पानी से घिरी हुई है। राज्य में पिछले 24 घंटे में बारिश की वजह से हुई घटनाओं में 10 लोगों की मौत हुई है।

गोरखपुर में राप्ती खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। 60 से ज्यादा गांव डूब गए हैं। यहां 3 बच्चियों की गड्ढे में डूबने से मौत हो गई है। वहीं, वाराणसी में गंगा के उफान पर होने से 15 से अधिक घाट डूब गए हैं। उधर,

बिहार में भी नेपाल से सटे इलाकों का यही हाल है। बेतिया, बगहा, सीतामढ़ी, मधेपुरा, अररिया समेत कई जिलों में बाढ़ आई है।

17 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने जिन 17 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है, उनमें मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, केरल, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा हैं। इनके अलावा गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु में भी बारिश हो सकती है।

शंकराचार्य के बयान पर भड़कीं कंगना

कहा-

राजनेता, राजनीति नहीं करेगा तो क्या गोलगप्पे बेचेगा

मंडी (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्ट्रेस और हिमाचल की मंडी सीट से सांसद कंगना रनोट ने जोशीमठ (ज्योतिर्मठ) के स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद पर पलटवार किया है। हाल ही में शंकराचार्य ने महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे को गद्दार और विश्वासघाती कहा था। इस पर अब कंगना ने कहा है कि ऐसी छोटी और ओछी बातें शंकराचार्य को शोभा नहीं देतीं। 15 जुलाई को स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे के आवास मातोश्री पहुंचे थे।

जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार 4 दिन में दोबारा खुला

कीमती सामान स्ट्रॉन्ग रूम में शिफ्ट होगा

पुरी/नईदिल्ली (एजेंसी)। ओडिशा के पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर का रत्न भंडार (खजाना) गुरुवार (18 जुलाई) को एक बार फिर से खोला गया है। इस दौरान इनर रत्न भंडार में मौजूद आभषूण और कीमती सामान को अस्थायी स्ट्रांग रूम में शिफ्ट किया जाएगा। इससे पहले रविवार (14 जुलाई) को 46 साल बाद रत्न भंडार को खोला गया था, जिसमें आउटर रत्न भंडार का सामान 6 बक्सों में शिफ्ट करके सील किया गया था। मंदिर प्रशासन ने सुबह 8 बजे से मंदिर में श्रद्धालुओं के प्रवेश पर रोक लगा दी है। अधिकारियों के मुताबिक, भगवान जगन्नाथ और उनके भाई-बहनों के समक्ष प्रार्थना करने के बाद ओडिशा सरकार की ओर से गठित पर्यवेक्षी (सुपरविजन) कमेटी के सदस्यों ने 9 बजे मंदिर में प्रवेश किया। रत्न भंडार के खजाने को सुबह करीब 10 बजे खोला गया। अधिकारियों ने बताया कि यदि कीमती सामान को बाहर निकालने का काम आज भी पूरा नहीं हो पाता है तो तय मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के तहत काम जारी रहेगा।

अब तक 6 बॉक्स खजाना निकल चुका

यूपी सरकार में खींचतान के बीच अखिलेश का ऑफर

कहा-100 लाओ, सरकार बनाओ; केशव की मोदी-शाह से नहीं हुई मुलाकात

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सरकार में खींचतान के बीच डिप्टी सीएम केशव मौर्य बुधवार देर रात दिल्ली से लौट आए हैं। 2 दिन में केशव मौर्य ने दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा से दो बार मुलाकात की, लेकिन उनकी पीएम मोदी और शाह से मुलाकात नहीं हो पाई।

इधर, सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने केशव मौर्य के लखनऊ लौटने के बाद एक्स पर दो पोस्ट किए। बुधवार रात लिखा- लौट के बुद्धू घर को आए। गुरुवार सुबह लिखा- मानसून ऑफरः 100 लाओ, सरकार बनाओ।

दोनों पोस्ट में अखिलेश ने किसी का नाम नहीं लिखा। हालांकि, सियासी गलियारों में इसे केशव मौर्य से जोड़कर देखा जा रहा है। इसकी वजह यह है कि 2022 में भी अखिलेश ने सार्वजनिक तौर पर केशव मौर्य को 100 विधायकों के साथ पाला बदलने पर मुख्यमंत्री बनाने का ऑफर दिया था।2 दिन तक केशव दिल्ली में रहे। गुरुवार रात लखनऊ लौटे।

भोपाल का कोलार सिक्सलेन 95 प्रतिशत तक पूरा

विधायक शर्मा ने अफसरों के साथ दौरा किया; बोले- कहीं भी न बने ब्लैक स्पॉट

भोपाल (नप्र)। भोपाल का पहला कोलार सिक्सलेन प्रोजेक्ट 95 प्रतिशत तक पूरा हो गया है। सर्व-धर्म कॉलोनी में एक तरफ का डेढ़ सौ मीटर का हिस्सा और चूना भट्टी चौराहे का काम ही बाकी है। ऐसे में कोलार की करीब 5 लाख आबादी को फायदा मिलेगा। गुरुवार को विधायक रामेश्वर शर्मा ने सिक्सलेन का निरीक्षण भी किया।

विधायक शर्मा ने कोलार के चूनाभट्टी क्षेत्र से निरीक्षण शुरू किया। उन्होंने अधिकारियों को पार्किंग, एप्रोच रोड, चौराहों, लेफ्ट टर्न की चौड़ाई, स्ट्रीट लाइट, हाईमास्ट लाइट सीसीटीवी कैमरे, ट्रैफिक सिग्नल आदि कार्यों के संबंध में निर्देश दिए। विधायक ने कहा कि अब पांच प्रतिशत काम ही बचा है।

ट्रैफिक जाम की समस्या दूर होगी- विधायक शर्मा ने कहा कि कोलार जल्द ही भोपाल के यातायात में आकर्षण का केंद्र बनने वाला है। भोपाल की सबसे लंबी सिक्स-लेन रोड का काम अब अपनी पूर्णता की ओर है। यह सड़क आधुनिक सुविधाओं से लेस होने के साथ ही बहुत सुंदर मार्ग का रूप लेगी। इससे न केवल यातायात सुगम होगा, बल्कि कोलार में नई जेनरेशन के रोजगारों और व्यापारों के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

विधायक ने यह दिए निर्देश

- पार्किंग स्थल सुनिश्चित करने, एप्रोच रोड के जल्द से जल्द निर्माण कार्य सहित विभिन्न निर्देश दिए।
- कोलार सिक्सलेन से 6 फॉर लेन सड़कों के जंक्शन हैं। ऐसे में इनके चौराहे सहित सभी लेफ्ट टर्न की चौड़ाई पर विशेष ध्यान देने को कहा।
- चौराहे पर व्यवस्थित यातायात चलता रहे, उसके लिए ट्रैफिक पुलिस के साथ प्लान तैयार किया जाएगा।
- पूरे मार्ग पर स्ट्रीट लाइट शुरू की जाए। हाईमास्ट लाइट के और अधिक पोल बढ़ाने को कहा है। रोड पर कहीं भी ब्लैक स्पॉट नहीं बनना चाहिए।
- सीसीटीवी कैमरे ट्रैफिक सिग्नल आदि कार्य जल्द से जल्द प्रारंभ किया जाए।

भोपाल में 5 करोड़ की सरकारी जमीन से अतिक्रमण हटाया

2 हेक्टेयर जमीन पर कई साल से अवैध कब्जा था; पुलिस के साथ पहुंचे अफसर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ग्राम हरिपुरा अर्जुन नगर में करीब 5 करोड़ रुपए कीमती सरकारी जमीन से गुरुवार को अवैध कब्जा हटाया गया। 2 एकड़ जमीन पर कई साल से अवैध कब्जा था। यह अतिक्रमण हटाने के लिए जिला प्रशासन अफसर पुलिस के साथ मौके पर पहुंचे और कार्रवाई की।

एसडीएम विनोद सोनकिया ने बताया, हुजूर तहसील के ग्राम हरिपुरा अर्जुन नगर सरकारी जमीन पर कुछ लोगों ने अवैध कब्जा जमा रखा था। इसकी बाजार कीमत करीब 5 करोड़ रुपए है। गुरुवार को राजस्व, पुलिस, नगर निगम, वन विभाग के संयुक्त अमले ने अवैध कब्जा हटाने की कार्रवाई की।

खासा पुलिस बल मौजूद, ताकि हंगामा न हो- जिला प्रशासन के अफसर पुलिस अमले के साथ मौके पर पहुंचे थे। ताकि, अतिक्रमणकारी कोई हंगामा न कर सकें। इस जमीन पर पक्के निर्माण भी किए गए थे।

कांग्रेस नेता डॉ. गोविंद सिंह की कोठी की नपाई

लोगों ने की थी रास्ते पर कब्जे की शिकायत

भिंड (नप्र)। भिंड के लहार में कांग्रेस के सीनियर लीडर डॉ. गोविंद सिंह की कोठी की नपाई की तैयारी है। बड़ी तादाद में पुलिस फोर्स मौजूद हैं। कांग्रेस नेता और गोविंद सिंह के समर्थक पर भी मौके पर हैं। डॉ. गोविंद सिंह के खिलाफ पिछले दिनों

स्थानीय लोगों ने सरकारी रास्ते पर कब्जा कर कोठी बनाने की शिकायत की थी। प्रशासन, नगर निगम और पुलिस टीम जांच कर रही है। डॉ.गोविंद सिंह के बेटे डॉ.अमित प्रताप सिंह ने सर्वे नंबर 2715, 2716 का सीमांकन कराने पर आपत्ति जताई है। उन्होंने लहार तहसीलदार को गुरुवार को इस संबंध में आवेदन भी दिया है।

वृक्षों से आच्छादित हो हमारा परिवेश

पौधा लगाएं और संकल्प लें उसकी देखभाल का : मंत्री श्री राजपूत

भोपाल (नप्र)। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने पौध-रोपण किया और संकल्प लिया कि वे उनके द्वारा लगाए जा रहे सभी पौधों की देखभाल भी करेंगे। मंत्री श्री राजपूत ओशो हनुमान पहाड़ी, बटालियन, मकरोनिया में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान अंतर्गत वृहद पौध-रोपण कार्यक्रम में शामिल हुए।

श्री राजपूत ने कहा की मात्र पौधा लगाना मकसद नहीं है बल्कि पौधे की परिवार के सदस्य जैसी जिम्मेदारी समझते हुए देखभाल करना भी जरूरी है। उन्होंने इस अभियान को स्वच्छता मिशन से जोड़ते हुए कहा कि हम यदि स्वच्छ वायु, ऑक्सीजन, स्वच्छ वातावरण चाहते हैं तो वृक्षों का उसमें सबसे अहम योगदान है। हमारा वातावरण स्वच्छ रहे इसके लिए हमारा परिवेश वृक्षों से आच्छादित होना आवश्यक है।

मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना के अनुसार समाज का हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझते हुए पौध-रोपण कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज हम जो पौधा रोप रहे हैं वह कल हमारा सच्चा मित्र बनकर बड़ा होगा, जो हमें फल, छाया के साथ स्वच्छ वातावरण भी देगा। इसलिए पौधे के लिए आवश्यक पानी, खाद सभी उचित मात्रा में मिले, इसकी भी व्यवस्था करें। हम अपने मां, पिता के नाम पर पेड़ लगाते हैं और हमारे द्वारा आज लगाए गए पौधे वर्षों तक जीवित रहकर उनका स्मरण कराते हैं।

विधायक श्री प्रदीप लारिया ने कहा कि प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है और हमें भी प्रकृति को देने की आवश्यकता है। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान हमें यह अवसर देता है कि प्रकृति के प्रति हम अपनी जिम्मेदारी निभाएं। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में भी वृक्ष पूजनीय हैं। वे हमें जीवन जीने के लिए अति आवश्यक आक्सीजन प्रदान करते हैं। हम सभी आगे आएं और एक पौधा अवश्य लगाएं और उसकी देखभाल भी करें। नगर पालिका मकरोनिया के अध्यक्ष श्री मिहीलाल अहिरवार ने आभार व्यक्ति किया।

इस अवसर पर सांसद श्रीमती लता वानखेड़े, जनप्रतिनिधि, सागर संभाग के कमिश्नर डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत, पुलिस महा निरीक्षक श्री प्रमोद वर्मा, कलेक्टर श्री दीपक आर्य, पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक तिवारी, नगर निगम कमिश्नर श्री राजकुमार खत्री सहित छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

इंदौर-खंडवा एनएच हाईवे पर टोल प्लाजा शुरू

सावन के पहले दिन से चुकाना पड़ेगा टोल टैक्स; कार के 100 रू. लगेंगे, लोकल पास बनेगा

खंडवा (नप्र)। इंदौर-ऐदलाबाद नेशनल हाईवे के तहत खंडवा जिले में फोरलेन हाईवे कंप्लीट हो चुका है। एनएचएआई के तहत केसीसी कंपनी ने धनगांव से बोरगांव बुजुर्ग तक हाईवे का निर्माण किया है। अब टोल प्लाजा शुरू करने की तैयारी कर दी है। 22 जुलाई यानी सावन महीने के पहले दिन से वाहन चालकों को फोरलेन हाईवे पर यात्रा के लिए टोल टैक्स देना पड़ेगा। यह टोल नाका छैगांवमाखन के आगे मोकलगांव में पड़ेगा।

एनएचएआई ने विज्ञप्ति जारी कर सूचना दी है कि

22 जुलाई 2024 से टोल टैक्स वसूला जाएगा। वाहनों की लोडिंग के हिसाब से दरें भी तय कर दी गई है। फोर व्हीलर वाहन (कार, जीप, वैन आदि) के लिए एक तरफ से 100 रूपए तथा एक ही दिन में यात्रा पूरी करने पर दो तरफ का 150 रूपए टोल टैक्स लगेगा। एनएचएआई के प्रोजेक्ट मैनेजर आशुतोष सोनी के मुताबिक, लोकल वाहन चालकों के लिए पास की व्यवस्था रहेगी। जो कि प्रतिमाह 340 रूपए निर्धारित की गई है। इसके लिए निर्धारित प्रक्रिया का पालन करना होगा। पूरी प्रक्रिया टोल नाका पर ही होगी।

खंडवा वालों को राहत, बुरहानपुर वाले देंगे टैक्स- नेशनल हाईवे पर यह टोल नाका छैगांवमाखन से आगे बुरहानपुर की ओर बना है। वहीं इंदौर से खंडवा का रास्ता टोल प्लाजा से पहले ही क्रॉस हो जाता है। ऐसे में खंडवा वालों को इस टोल से राहत मिलेगी। वहीं खंडवा के ही पंधाना, बोरगांव तथा बुरहानपुर की ओर से आने वाले वाहनों को टोल प्लाजा रास्ते में ही पड़ेगा।

कबाड़ गोदाम में ब्लास्ट, कर्मचारी की मौत

जबलपुर में गोदाम का मालिक गिरफ्तार

- रायपुर के ठेकेदार से खरीदे थे आर्मी के डिफ्यूज बम

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में कबाड़ गोदाम में ब्लास्ट से कर्मचारी की मौत हो गई। घटना गुरुवार दोपहर आधारताल इंडस्ट्रियल एरिया की है। कबाड़ रायपुर के एक ठेकेदार से खरीदा गया था। इसमें पेटी में आर्मी के डिफ्यूज बम थे। कर्मचारी पेटी को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रख रहा था। इसी दौरान धमाका हो गया।

एसपी आदित्य प्रताप सिंह ने बताया, गोदाम मालिक कपिल जैन को गिरफ्तार कर लिया गया है। शुरुआती पूछताछ में उसका कहना है कि बुधवार को ही कबाड़ रायपुर से ट्रक में भरकर लाया गया था। बम स्क्वायड ने घटनास्थल की जांच की है।

पुलिस ने गोदाम किया सील

जबलपुर पुलिस अब रायपुर के ठेकेदार से भी संपर्क कर रही है। यह भी जानने की कोशिश कर रही है कि पेटी कॉन्ट्रैक्ट में आखिर कैसे आर्मी के डिफ्यूज बमों को बेचा जा रहा है। फिलहाल गोदाम को सील कर दिया गया है। जबलपुर स्थित सेंट्रल ऑर्डिनेंस डिपो के अधिकारियों को मौके पर बुलाया गया है।

चाय पीने गए थे बाकी के कर्मचारी

जिस समय ये हादसा हुआ बाकी के कर्मचारी गोदाम के बाहर चाय पीने के लिए गए थे। कर्मचारी राजा चौधरी कबाड़ से भरी पेटी को एक स्थान से दूसरे स्थान रख रहा था, तभी ब्लास्ट हुआ। धमाके की आवाज सुनकर दूसरे कर्मचारी मौके पर पहुंचे और गोदाम मालिक को फोन कर सूचना दी। घायल हालत में राजा को प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

एक हफ्ते पहले ही गोदाम में शुरू की थी नौकरी

राजा चौधरी के भाई राहुल चौधरी ने बताया कि एक हफ्ते पहले ही राजा ने गोदाम में काम करना शुरू किया था। परिवार में दो भाई और तीन बहन हैं। पिता शासकीय नौकरी में हैं। लेकिन, बीमार रहने के कारण अक्सर ड्यूटी पर नहीं जा पाते। घटना के दो घंटे बाद हमें सूचना दी गई। इसकी जांच होनी चाहिए।

दिग्विजय बोले-थाने में मनेगी बकरा ईद और गुरुनानक जयंती

जहां सुंदरकांड हो रहा था, वहां से जूता फेंका गया; मंत्री सारंग पर एफआईआर कराने गए थे

भोपाल (नप्र)। नर्सिंग कॉलेज घोटाले को लेकर गुरुवार को भोपाल में भाजपा-कांग्रेस में टकराव हो गया। मंत्री विश्वास सारंग के खिलाफ एफआईआर कराने अशोका गार्डन थाने तक पैदल मार्च । उधर, भाजपा कार्यकर्ता और महिलाएं थाने में सुंदरकांड कर रहे थे। उनके हाथों में सिंघार और कटारे के खिलाफ नारे लिखी तख्तियां थीं। पुलिस ने चौराहे पर बैरिकेड्स लगाकर कांग्रेसियों को रोक दिया। यहां भाजपा कार्यकर्ता भी मौके पर पहुंच गए। टकराव के हालात देखकर पुलिस को अतिरिक्त फोर्स बुलाना पड़ा। हंगामे के बीच कांग्रेस ने मंत्री सारंग के खिलाफ कार्रवाई की मांग का ज्ञापन पुलिस को सौंपा।

थाने में ईद और सभी धर्मों के त्योहार मनेंगे- थाने से लौटने के बाद पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने कहा, थाने में सुंदरकांड का पाठ चल रहा था। मैं 10 साल सीएम रहा। ये कहीं नहीं लिखा कि थाने में सुंदरकांड हो सकता है। टीआई ने बताया कि ये पुलिस ने आयोजित किया। फिर कहा, नरेश यादव के जन्मदिन पर पुलिस की ओर से पाठ किया गया है। हमारे कार्यकर्ताओं का जन्मदिन भी थानों में मनेगा। बकरा ईद और गुरुनानक जयंती भी मनेगी।

जहां सुंदरकांड चल रहा था, वहां से जूता फेंका गया। वो एक कॉन्स्टेबल को लगा। मैं सरकारी अधिकारी-कर्मचारियों को चेतावनी देना चाहता हूं, नियम से नहीं चले तो हम चुप नहीं बैठेंगे।

शिवराज को खुरचन मिली तो मलाई किसने खाई- दिग्विजय ने कहा- व्यापम से लेकर अब तक हो रहे घोटाले की मानसिकता और तरीका..., ये ब्रेन किसका है। उस व्यक्ति का है, जो यहां मुख्यमंत्री रहा। अब केंद्र में मंत्री बन गया। ये कहते हैं कि हमको तो खुरचन मिल जाती थी, मलाई ऊपर जाती थी। शिवराज सिंह को डंपर कांड से लेकर अब तक के घोटालों की खुरचन मिली तो मलाई किसने खाई। नर्सिंग घोटाले की सीबीआई जांच मध्यप्रदेश सरकार नहीं, हाईकोर्ट के आदेश पर हुई। जांच करने वाले वही लोग हैं, जिन्होंने व्यापम में जांच की थी। ईओडब्ल्यू,एसआईटी पर भरोसा नहीं कर सकते।

चार दिन में सारंग का एक और घोटाला उजागर करूंगा- अशोका गार्डन थाने से लौटने के बाद करीब 2 बजे कांग्रेस नेताओं ने पीसीसी कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार ने कहा, भाजपा की सरकार बजट सत्र में घबरा गई थी। नर्सिंग काउंसिल में रजिस्ट्रार की नियुक्तियां विश्वास सारंग के कार्यकाल में हुई। अपात्र लोगों को रजिस्ट्रार बनाया गया। इस मामले में मंत्री विश्वास सारंग का इस्तीफा होना चाहिए। महिलाओं को आगे कर रहे हैं। मैं चार दिन के भीतर सारंग का एक और बड़ा घोटाला सामने लाऊंगा। वे तैयार रहें। भाजपा की सरकार भ्रष्टाचारियों को बचा रही है।

सारंग का इस्तीफा नहीं होने तक आंदोलन करेंगे- प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा, पुलिस के व्यवहार पर शर्म आती है। पुलिस बीजेपी की कार्यकर्ता बन गई है। प्रशासन संविधान से नहीं बीजेपी के संविधान से चल रहा है। अनुमति लेकर प्रदर्शन करने गए थे। थाने के अंदर बीजेपी के कार्यकर्ताओं को बिठा दिया। इसका मतलब है कि चोर की दाढ़ी में तिनका है। जब तक विश्वास सारंग का इस्तीफा नहीं होगा तब तक कांग्रेस पार्टी सदन से सड़क तक आंदोलन करती रहेगी। जो मंत्री दोषी होगा उसके क्षेत्र में जाकर प्रदर्शन करेंगे। नरेला में शुरुआत की है।

बिजली गिरने से स्टूडेंट समेत 4 की मौत

भोपाल समेत कई जिलों में तेज बारिश; ग्वालियर समेत 11 जिलों में अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का दौर जारी है। गुरुवार को भोपाल, रीवा, रायसेन समेत कई जिलों में तेज बारिश हुई। ग्वालियर में सुबह पानी गिरी। इधर छतरपुर, सिवनी और डिंडौरी में आकाशीय बिजली गिरने से एक स्टूडेंट समेत 4 लोगों की मौत हो हो गई।

मध्यप्रदेश में अब तक एवरेज 10.8 इंच बारिश हो गई है। यह मानसून के कोटे से 5 प्रतिशत कम है। पूर्वी हिस्से में अब तक 18त्न बारिश कम हुई है जबकि पश्चिमी हिस्से में 7 प्रतिशत अधिक है।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटे में 11 जिलों उत्तरी नीमच, सीहोर, रायसेन के भीमबैठिका, अशोकनगर, ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया के रतनगढ़, निवाड़ी के ओरछा, टीकमगढ़, छतरपुर के खजुराहो और पन्ना में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। यहां गरज-चमक के साथ बिजली भी गिर सकती है।

इन जिलों में भी बारिश के आसार- मौसम विभाग ने बताया कि श्योपुर, मुरैना, भिंड, गुना, विदिशा के उदयगिरि, भोपाल, जबलपुर, कटनी, सतना, मंडला, सिवनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सागर, दमोह, डिंडौरी, बालाघाट, अनूपपुर के अमरकंटक, शहडोल, उमरिया, रीवा, मऊगंज, मैहर, सीधी, राजगढ़, शाजापुर, बैतूल, हरदा, पांढुर्ना, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, मंदसौर, देवास, इंदौर, खंडवा और बुरहानपुर में भी बारिश होने की संभावना है।

दो सिस्टम प्रदेश में करा रहा बारिश- भोपाल के वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि मानसून ट्रफ एमपी के गुना, नरसिंहपुर जिलों से होता हुआ गुजर रहा है। साउथ गुजरात और सौराष्ट्र के ऊपर साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम है। वहीं, वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) भी एक्टिव है। इस कारण एमपी के कई जिलों में तेज बारिश का दौर जारी है।

बिजली गिरने से प्रदेश में 8 लोग घायल- सिवनी में गुरुवार सुबह मवेशी चरा रहे बुजुर्ग आकाशीय बिजली की चपेट में आ गए। बुजुर्ग को जबलपुर मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। बुधवार को सीहोर में खेत पर काम कर रहे 7 मजदूरों पर आकाशीय बिजली गिर गई। सभी को अस्पताल ले जाया गया। दो की हालत गंभीर होने पर उन्हें नर्मदापुरम रेफर कर दिया गया। इधर डिंडौरी में घेवरी पंचायत में आकाशीय बिजली गिरने से सास-बहू की मौत हो गई। गुलशन बाई (48) बहू संगीता बाई (28) अपने खेत में धान का रोपा लगा रही थी।

कोलार, बाणसागर में बढ़ा पानी- लगातार बारिश होने से प्रदेश के बड़े डैम और तालाबों में पानी बढ़ रहा है। भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब में 1659.60 फीट पानी जमा हो गया है। सीहोर के कोलार डैम में 1482.90 फीट पानी है। शहडोल के बाणसागर, खंडवा के ओंकारेश्वर, जबलपुर के बरगी, नर्मदापुरम के तवा डैम, भोपाल के कलियासोत डैम में भी एक से दो फीट तक पानी बढ़ा है।

राजधानी की सड़कों पर पानी भरा: एमपी नगर, करोंद इलाके में सड़कें तालाब बन गईं; घर-दुकानों में भरा पानी

भोपाल में दोपहर 3 बजे के बाद तेज बारिश हुई। आधे घंटे तक इतना तेज पानी गिरा कि एमपी नगर, करोंद समेत कई इलाकों में सड़कें तालाब बन गईं। अल्पना तिराहे पर भी पानी भर गया। इससे ट्रैफिक जाम लग गया। हर्षवर्द्धन नगर, जहांगीराबाद, तुलसीनगर में भी घर-दुकानों में पानी भर गया। तेज बारिश और आंधी चलने से श्यामला हिल्स रोड पर एक पेड़ भी गिर गया।

नाथू बरखेड़ा के प्राइमरी स्कूल में भी पानी भर गया। क्लॉस रूम तक पानी पहुंच गया। इससे स्टूडेंट्स और शिक्षक खासे परेशान हुए। इससे पहले गुरुवार दोपहर में कोलांस नदी लेवल से 3 फीट ऊपर बही। इसका पानी बड़ा तालाब में आ रहा है। जिससे लेवल बढ़ रहा है। मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल में इस सीजन में कुल 382 मिमी यानी, 15 इंच पानी गिर चुका है, जो कोटे की 35 प्रतिशत बारिश है। इधर, तेज उमस के बाद दोपहर 3 बजे मौसम ने करवट बदली और तेज बारिश शुरू हो गई। एमपी नगर चौराहे पर सड़क पर डेढ़ फीट तक पानी भर गया। शाम को भी हल्की बारिश का दौर जारी है।

अल्पना तिराहे पर भरा पानी, ट्रैफिक जाम की स्थिति- तेज बारिश की वजह से अल्पना तिराहे पर पानी भर गया। इससे यहां ट्रैफिक जाम की स्थिति बन गई। पिछले दिनों हुई बारिश की वजह से भी 2 घंटे तक यहां जाम की स्थिति बन गई थी।

वार्ड-30 स्थित हर्षवर्द्धन नगर में भी जलभराव की स्थिति बन गई। यहां कई घरों में पानी भर गया।

जहांगीराबाद, करोंद जैसे कई इलाकों में भी सड़कें तालाब बन गईं।

तुलसीनगर में कई घरों में पानी भर गया। नाले ओवरफ्लो होने से यह स्थिति बनी।

वार्ड नंबर 27 नेहरू नगर कोटरा में जलभराव की स्थिति बन गई। पूर्व पार्षद एवं पूर्व जिला अध्यक्ष मोनू सक्सेना ने आरोप लगाए कि बारिश से पहले नगर निगम ने नालों की सफाई नहीं कराई। इस कारण यह स्थिति बनी है।

संपादकीय

यूपी भाजपा : किस पर गिरेगी गाज

उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा की लोकसभा चुनाव में करारी हार के बाद पार्टी में घमासान थमने का नाम नहीं ले रहा है। हालांकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पद से हटाने की मुहिम पर अल्प विराम लगता दिखाई पड़ रहा है। क्योंकि इस जूतम पैजार के बीच योगी ने राज्य में 10 सीटों पर होने वाले विधानसभा उपचुनावों के लिए 30 मंत्रियों को जिम्मेदारी सौंप दी है। इन दस सीटों में 5 एनडीए के पास है और तीन भाजपा के पास। पांच समाजवादी पार्टी के पास हैं। अगर भाजपा और एनडीए इन उपचुनावों में खराब प्रदर्शन करते हैं तो योगी का पद से जाना लगभग तय है कि जिसकी पृष्ठभूमि लोकसभा चुनाव के बाद से तैयार होनी शुरू हो गई थी। फिलहाल लोस चुनाव में भाजपा की हार को लेकर एक समीक्षा रिपोर्ट तैयार कर प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह तथा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा को सौंपी है। बताया जाता है कि 15 पेज की इस रिपोर्ट में भाजपा की पराजय के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। यह रिपोर्ट पार्टी के 40 हजार कार्यकर्ताओं से चर्चा के बाद तैयार की गई बताई जाती है। इस रिपोर्ट पर सीएम योगी आदित्यनाथ से भी चर्चा होगी। गौरतलब है कि हाल के लोकसभा चुनाव में भाजपा राज्य में 29 सीटों पर हार गई थी, जिसमें प्रतिष्ठा की सीट अयोध्या भी शामिल थी। यही नहीं खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी वाराणसी सीट से बमुश्किल डेढ़ लाख वोटों से जीत पाए थे। पूर्वांचल पर तो काशी को छोड़ भाजपा का लगभग सफाया ही हो गया था। उत्तर प्रदेश में भाजपा के खराब प्रदर्शन से पार्टी स्पष्ट बहुमत से 43 सीटे पीछे रह गई थी और उसे मजबूरन केन्द्र में एनडीए की सरकार बनानी पड़ी। यह अब साफ हो चुका है कि भाजपा की हार के प्रमुख कारणो में एक पार्टी के राज्य नेतृत्व और आलाकमान के बीच अंतर्कलह का होना भी है। कहा जाता है कि मोदी शाह योगी को कब से हटाना चाहते थे, लेकिन संघ ने उन्हें ऐसा करने से रोका। अब जिस तरह से हार के कारणों की समीक्षा और संगठन व सत्ता में बदलाव की जो बिसात बिछाई जा रही है, उसका परिणाम यूपी में बड़े बदलाव के रूप में होगा। पिछले दिनो पार्टी के हार के कारणों की समीक्षा के दौरान भी आपसी मतभेद खुलकर सामने आए। हार के लिए जहां योगी ने परोक्ष रूप से पार्टी आला कमान के अतिविश्वास को जिम्मेदार ठहराया तो उप मुख्यमंत्री और राज्य सीएम पद के तगड़े उम्मीदवार केशव प्रसाद मौर्य ने सत्ता और संगठन में तालमेल की कमी का जिक्र करते हुए साफ कहा कि संगठन सत्ता से ऊपर है। आशय यह था कि योगी मनमर्जी से काम करते हैं। उन पर किसी का कोई अंकुश नहीं है। इस बीच केशव प्रसाद मौर्य के एक समर्थक एक पूर्व मंत्री ने हार के लिए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी से इस्तीफे की मांग भी कर डाली है। संभावना इस बात की है कि पार्टी फिलहाल संगठन में बड़े बदलाव करेगी। इसके तहत चौधरी की जगह केशव प्रसाद मौर्य को फिर से प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। 2017 में उन्हीं के नेतृत्व में भाजपा ने विधानसभा चुनाव में तीन सौ से ज्यादा सीटें जीती थीं। बीजेपी की चिंता यह है कि राज्य में 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं। अगर पार्टी में अंतर्कलह नहीं थमी और सत्ता तथा संगठन में तालमेल नहीं सुधरा तो विस चुनाव तो क्या पार्टी उपचुनावों में ही ढेर हो जाएगी। देखना यह है कि लोस चुनाव में हार की गाज किस पर गिरती है।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। संप्रति केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की शिक्षा दृष्टि से उपजे सवाल

देश तेजी से आगे बढ़ने को तैयार है। राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020 अब भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था में प्रसार पा रही है। भारत में भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान के विस्तार के लिए पुरजोर प्रयास हो रहे हैं। पिछले कुछ सैलून में भारतीय विश्वविद्यालयों ने ग्लोबल रैंकिंग में पहले से काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। एक दशक पहले जो भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के स्तर थे। उसमें सुधार हुए हैं और एक दशक पहले क्यू एस रैंकिंग में भारत के लिए सिर्फ नौ शिक्षा संस्थान थे आज इनकी संख्या पचास के आसपास पहुँच गयी है। निःसंदेह भारत के एजुकेशनल सिस्टम में व्यापक सुधर हो रहे हैं। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी ने भारत के युवाओं के सपनों का विस्तार किया है। भारत के यूनीवर्सिटीज ने विश्व की अन्य यूनिवर्सिटीज के साथ साझेदारी शुरू कर दी है।

ऐसे समय में भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने यह आह्वान किया है कि ज्ञान समाज और देश के विकास के लिए होने चाहिए। वह अपने भारतीय भविष्य को सहेजना चाहती हैं। स्थान था भुवनेश्वर का राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जहाँ भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु यह एक प्रकार से अपील कर रही थीं कि हमारे विश्वविद्यालयों व सस्थानों से उपाधि धारित जिज्ञासा और मानवता को बनाये रखें। उन्हें दयाहीन विज्ञान से भय है इसलिए उन्होंने गाँधी को स्मरण किया भुवनेश्वर में। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गाँधी की वैचारिकी इसीलिए उद्धरण दिया कि महात्मा गांधी ने सात सामाजिक पाप परिभाषित किए हैं जिनमें एक है दयाहीन विज्ञान। यानि मानवता के प्रति संवेदनशीलता से रहित विज्ञान को बढ़ावा देना पाप कर्म करने जैसा है। उनका यह स्पष्ट संदेश आपको सदैव याद रखना चाहिए। वह यह अपील इसलिए कर रही थीं क्योंकि जिस प्रकार से शैक्षणिक व्यवस्था से मशीनीकृत दिमाग की पीढ़ी तैयार हो रही है वह भारत के भविष्य को कभी सुन्दर नहीं बना सकती है। वह सुन्दर तभी बनेंगी जब उनमें मानवता के बीज अंकुरित रहेंगे और वे मुरझाएंगे नहीं। द्रौपदी मुर्मू का इसलिए स्पष्ट मत है कि सार्थक विद्या एवं ज्ञान वही है जिसका प्रयोग मानवता की बेहतरी एवं उत्थान के लिए हो। इसे इतना गंभीर होने की इसलिए आवश्यकता है क्योंकि उनके सम्पूर्ण अभिव्यक्ति के साथ यह विश्वास जाताना कि मुझे आशा है कि विज्ञान शिक्षा से जुड़े आप जैसे सभी लोग एवं नीति-निर्मातागण मिलकर इन सभी समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करेंगे, ताकि मानवता, अनुसंधान एवं विकास का अधिक से अधिक लाभ उठा सके और उसे कोई हानि न पहुंचे, यह अपने आप में उनके व्यापक चिंतन से निकली अभिव्यक्ति है जिस पर वह सभी वैज्ञानिक नवोदितों को सन्देश देती हैं कि हमारे जीवन के आधार मानवता की डोर को बांधकर रखें।

बेटों और बेटियों के बीच की असमानता को समाप्त करने की हिमायती राष्ट्रपति ने इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की कि आज हमारी बेटियां आदित्य एल-1 और चंद्रयान-3 जैसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक मिशन का हिस्सा बनी हैं और वह सक्षम नेतृत्व भी कर रहीं हैं। उच्च शिक्षण संस्थानों में एसटीईएमएम विषयों में अब बेटियों की भागीदारी 40 प्रतिशत से अधिक है। लेकिन, मैंने देखा है कि आज इस संस्थान में उपाधि, पदक एवं पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों में छात्राओं की संख्या छात्रों से कम है। मुझे आशा है कि की यह स्थिति दूर होगी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की चिंता यह उस समय आई है जब विश्व में स्त्री नेतृत्व पर व्यापक पहल हो रही है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुटेरेस बार-बार जेंडर बैलेंस करने पर बल दे रहे हैं और उन्होंने यह भी दावा किया है कि उनके आने के बाद संयुक्त राष्ट्र में जेंडर बैलेंस कायम हुआ है और हर चार कर्मचारियों में से एक महिला शीर्ष नेतृत्व को हमने मौका दिया है।

राष्ट्रपति इसलिए यह चाहती हैं कि बालिका अनुसंधानकर्ता व अध्ययनकर्ताओं में अभिवृद्धि हो। राष्ट्रपति उस विषय को उठायी हैं जो हिंदुस्तान में अब विशेष ध्यान देने वाली बात है। यदि भारत में स्त्रियों के पठन-पाठन और भागीदारी ठीक नहीं होगी तो हमारी समानता की सारी जो संकल्पना है वह खोखली साबित होगी।

नैतिक और सामाजिक मुद्दों से जुड़े संकट की चिंता भी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की विशेष चिंताओं में शामिल है। राष्ट्रपति का स्पष्ट शब्दों में यह कथन है कि नए-नए तकनीकी विकास मानव समाज को क्षमताएं प्रदान कर रहे हैं, लेकिन साथ ही मानवता के सामने नई चुनौतियां भी पैदा कर रहे हैं। वह यह स्वीकार करती हैं कि तकनीक कई असाध्य बीमारियों के समाधान करने की दिशा में एक बहुत सहयोगी साबित हुई है। परंतु इस तकनिकी के प्रयोग के कारण नैतिक और सामाजिक मुद्दों से जुड़े संकट भी प्रस्तुत हो रहे हैं। इसी प्रकार जेनरेटिव आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में हो रहे विकास से डीप फेक की समस्या तथा अनेक रेगुलेटरी चैलेंजेज सामने आ रहे हैं। इन संवेदनशील प्रश्नों को जो द्रौपदी मुर्मू ने उठाया है वह आसान सवाल नहीं हैं अपितु सही मायने में देखे जाएँ तो इस पर व्यापक रूप से भारतीय मैकेनिज्म को सजग होने की आवश्यकता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही है कि उनके वक्तव्यों में नई पीढ़ी को सम्हलकर चलने की सलाह है और मनुष्यता से जुड़े रहने की अपील है। वह नहीं चाहतीं कि हमारे छात्र या छात्राएं भ्रम में जीवन जियें। उन्होंने इसीलिए बहुत साफगोई से यह कहा कि जो नैतिक और सामाजिक मुद्दों से जुड़े संकट हैं या जेनरेटिव आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस के माध्यम से समन्वय व संयोजन की समस्याएं हैं, उसे हम हलके में न लें और पूरी सजगता से इस दिशा में हमारी सोच और एक्शन दोनों उभरकर मानवता के लिए प्रेरित होने चाहिए। जो चीजें हमारे लिए खतरा बन सकती हैं, उसे दबाया जाना चाहिए या उससे मुक्ति के उपाय ढूँढे जाने चाहिए। इसके साथ ही शिक्षा में लड़कियों के शैक्षणिक उत्थान के व उनकी संख्या में जो अभिवृद्धि की पहल है वह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे देश में महिला साक्षरता दर जितनी बढ़ेगी उतना ही तेजी से भारत विकसित राष्ट्र की ओर अग्रसर होगा।

वर्ष 2022 में हुए शिक्षा परिवर्तन शिखर सम्मेलन में विकासशील देशों में एसडीजी-4 को प्राप्त करने के लिए जोर दिया गया। न्यूयार्क में हुए शिक्षा में बदलाव पर आयोजित एक विशेष कार्यक्रम का यदि रुख करें तो उसमें से यह बात निकलकर आई है कि दुनिया भर में कुल देशों का केवल छठा हिस्सा ही, गुणवत्ता युक्त शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच के टिकाऊ विकास लक्ष्य-4 को हासिल करने के रास्ते पर है। ऐसे समय में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का लड़कियों की शिक्षा पर बल देना, उन्हें मुख्य धारा में सम्मिलित होने का आह्वान करना और साथ ही शिक्षा ऐसी हो जो मानवता की भी बात करती हो, इस पर सबका ध्यान आकर्षित करना, बहुत ही मायने रखते हैं। आने वाले समय में शिक्षा के डिजिटल रूपान्तरण और गति पकड़ेगा तो देश की कोई महिला शिक्षा से वंचित न हो, इसे सुनिश्चित करना ही होगा। इससे देश का ही भला होने वाला है। आगामी भविष्य-शिखर सम्मेलन जो सितम्बर में संयुक्त राष्ट्र में होने जा रहा है, उस शिखर सम्मलेन से भी कई नए आयाम विचार के लिए आएंगे लेकिन आज जो राष्ट्रपति मुर्मू ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को लेकर विचार दिए हैं उस पर यदि देश गौर करता है हमारे देश की प्रतिष्ठा और बढ़ेगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

नजरिया

अमिताभ पाण्डेय

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

युवाओं की नजर में जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय अधूरे

चुनावों के सन्दर्भ में हमारे युवा जलवायु परिवर्तन को लेकर क्या सोचते हैं? क्या वे जलवायु परिवर्तन को

जलवायु परिवर्तन और जलवायु शिक्षा को लेकर पिछले चुनाव में पहली बार वोट देने वाले युवाओं के सर्वे में चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। इसके मुताबिक दिल्ली में पहली बार वोट देने वाले युवाओं ने जलवायु परिवर्तन को अपने राजनीतिक एजेंडे में सबसे ऊपर रखा है। सर्वे में शामिल 40 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सरकार जलवायु परिवर्तन के मुद्दों से निपटने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रही है। वहीं, 83 प्रतिशत ने उनके स्कूल में दी जा रही पर्यावरण शिक्षा को औसत और बेहद खराब माना है।

ये आंकड़े 'परसेप्शन ऑफ फर्स्ट-टाइम वोटर्स ऑन क्लाइमेट एजुकेशन इन इंडिया' सर्वे में सामने आए हैं। सर्वे 'असर' सोशल इम्पेक्ट एडवाइजर्स', 'क्लाइमेट एजुकेटर्स नेटवर्क' और 'सीएमएसआर कंसल्टेंट्स' की ओर से चार राज्यों - दिल्ली, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और महाराष्ट्र के सात शहरों - दिल्ली, मुंबई, पुणे, चेन्नई, कोयम्बटूर, कोलकाता और आसनसोल में किया गया है। सर्वे में शामिल हुए युवाओं की उम्र 18-22 साल के बीच है।

'टीबीएफ- द बनियन फाउंडेशन' की एजुकेशन डायरेक्टर स्वाति क्षत्रा स्कूलों और कॉलेजों में एकीकृत शिक्षा की जरूरत और जलवायु परिवर्तन के असर के बारे में पढ़ाने पर जोर देती हैं। वे कहती हैं, 'जलवायु परिवर्तन के कारणों और नकारात्मक प्रभावों को गिनाना ही काफी नहीं है। युवाओं को केवल निराशा, भय और चिंता महसूस होगी तो वे बेचैन होंगे। इसीलिए जलवायु शिक्षा को समाधान वाले दृष्टिकोण के साथ और अधिक व्यावहारिक बनाना होगा। साथ ही यह दृष्टिकोण संकट से निपटने, लचीली रणनीतियों और टिकाऊ उपभोग पर केन्द्रित होना चाहिए।'

इस सर्वे से जलवायु शिक्षा के स्तर का भी पता चलता है। 59 प्रतिशत युवाओं को उनके स्कूलों-कॉलेजों में दी जा रही शिक्षा से जलवायु परिवर्तन के कारण और परिणामों के बारे में पर्याप्त और सही जानकारी नहीं मिलती। हालांकि इनमें से अधिकतर युवाओं ने मीडिया या सोशल मीडिया सहित अन्य माध्यमों से इस बारे में पढ़ा है। वहीं, दिल्ली में तमाम पर्यावरणीय चिंताओं के कारण 92 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि उन्हें जलवायु शिक्षा को मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना बेहद महत्वपूर्ण लगता है। इसके अलावा दिल्ली में जलवायु संकट की वजह से 61 प्रतिशत युवाओं ने निराशा, डर, गुस्सा और चिंता जताई, जबकि 39 फीसदी युवा जलवायु परिवर्तन के दौर में भविष्य के प्रति आशावादी थे।

'क्लाइमेट एजुकेटर्स नेटवर्क' की संस्थापक सदस्य, सुनयना गांगुली कहती हैं, 'सर्वे के नतीजों से स्पष्ट है कि स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रम में जलवायु शिक्षा आसान भाषा और तरीके से उपलब्ध नहीं है। निकट भविष्य में आने वाले जलवायु संकट की तैयारी भी नहीं है। इसीलिए हमें युवाओं में आशा और भरोसा पैदा करना चाहिए। साथ ही गुणवत्तापूर्ण जलवायु पाठ्यक्रम, कौशल को बढ़ावा देने के लिए स्थान-आधारित और नई शिक्षा प्रणाली का उपयोग करना चाहिए। जलवायु के प्रति जागरूक समाज बनाने के लिए युवाओं में हुनर और ज्ञान का विकास करना पड़ेगा।'

सर्वे के प्रमुख निष्कर्ष : सर्वे में शामिल हुए युवाओं में से 58 प्रतिशत ने कहा कि स्कूल-कॉलेज में उन्हें मिली जलवायु शिक्षा 'औसत' है, जबकि 25 प्रतिशत ने इसे 'खराब' माना। सर्वे में शामिल 40 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सरकार जलवायु परिवर्तन के मुद्दों से निपटने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रही है।

59 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि उन्हें जलवायु परिवर्तन के कारणों और परिणामों के बारे में पर्याप्त सूचना नहीं है। यह जलवायु परिवर्तन की उनकी समझ की रैंकिंग में भी दिखता है, जिनमें से अधिकांश (67 प्रतिशत) ने कहा कि वे इस बारे में कुछ हद तक ही जानते हैं। युवाओं ने जलवायु संकट से निपटने के लिए तीन बड़े तरीके गिनाए। जिसमें 19 प्रतिशत ने परिवहन में टिकाऊ ढांचे को बढ़ाने, 18 प्रतिशत ने रिन्यूएबल ऊर्जा स्त्रोतों को प्राथमिकता देने और 17 प्रतिशत ने जलवायु शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों पर जोर देने की बात कही।

युवाओं से राजनीतिक मुद्दों को लेकर भी सवाल किए गए। इसमें 19 प्रतिशत ने इलाज के संकट और 16 प्रतिशत ने आर्थिक संकट के बारे में बात करने वाले उम्मीदवारों या पार्टियों को प्राथमिकता दी। वहीं, 16 प्रतिशत ने जलवायु परिवर्तन को वोट देते वक्त महत्वपूर्ण विषय माना। सर्वे में शामिल 63 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि उन्होंने जलवायु शिक्षा के पहलुओं को अपने दैनिक जीवन में अपना लिया है। हालांकि समूह चर्चा के दौरान अधिकतर युवाओं का जलवायु परिवर्तन से आशय पर्यावरण के मुद्दे थे। उदाहरण के लिए, जब युवाओं से जलवायु परिवर्तन से निपटने के तरीके पूछे गए तो ज्यादातर ने पेड़ लगाने को इसका समाधान बताया।

इसी प्रकार 76 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि उन्होंने अपने स्कूल में जलवायु परिवर्तन के बारे में कुछ भी नया नहीं सीखा है। यह बयान जलवायु शिक्षा को लेकर वर्तमान पाठ्यक्रम में मौजूद शिक्षा के अंतर को दिखाता है। सर्वे के सवालों का जवाब देते हुए 92 प्रतिशत युवाओं ने कहा कि उन्हें जलवायु शिक्षा को मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना बेहद महत्वपूर्ण लगता है। सर्वे में शामिल हुए युवाओं ने स्वास्थ्य के संकट को सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा बताया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन और आर्थिक संकट को दूसरे स्थान पर रखा।

सुझाव और सिफारिशें

क्लाइमेट चेंज के विषयों को व्यापक रूप से समझने के लिए स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम की समीक्षा और उन्हें अपडेट करने की जरूरत है। साथ ही इसे सुधारने की रणनीतियों और अंतरराष्ट्रीय केस स्टडीज जैसे नए पहलुओं को शामिल करना चाहिए।

समग्र समझ को बढ़ावा देते हुए, सामाजिक चुनौतियों के साथ इसके अंतर्संबंध को सामने लाने के लिए सभी विषयों में जलवायु शिक्षा को शामिल करना चाहिए।

बच्चों में शुरूआत से ही पर्यावरण संबंधी साक्षरता पैदा करने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में आयु के हिसाब से जलवायु शिक्षा मॉड्यूल लाने की जरूरत है।

जैसे-जैसे छात्र आगे बढ़ेंगे, उसी हिसाब से जलवायु परिवर्तन संबंधी विषयों में भी बढ़ोतरी की जानी चाहिए। इससे सही उम्र में सही जलवायु शिक्षा सुनिश्चित होगी।

जलवायु परिवर्तन से संबंधित व्यावहारिक गतिविधियों, क्षेत्रीय कार्य और सामुदायिक परियोजनाओं की समझ और प्रतिबद्धता को गहरा करने के लिए सुविधाजनक बनाना।

छात्रों को पर्यावरणीय चुनौतियों से जोड़ने के लिए प्रयोगों, यात्राओं और केस-स्टडीज जैसे संवादी तरीकों के माध्यम से जोड़ना।

पर्यावरणीय स्थिरता के लिए छात्र-नेतृत्व वाले मंच स्थापित करें, कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भागीदारी को प्रोत्साहित करें।

स्कूलों में अनिवार्य जलवायु शिक्षा और सभी स्तरों पर प्रभावी नीति के कार्यान्वयन की वकालत जरूरी है।

राजनीतिक एजेंडे में जलवायु परिवर्तन को प्राथमिकता दें और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने वाली नीतियों की वकालत करें।

कार्यशालाओं, इंटर्नशिप और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जलवायु पहल में युवाओं की भागीदारी के लिए मंच प्रदान करना।

जलवायु शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की निगरानी और सुधार के लिए नियमित मूल्यांकन और प्रतिक्रिया तंत्र स्थापित करें। (सप्रेस)

कटाक्ष

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मास्साब ऑफलाइन हाजिर और मोबाइल में ऑनलाइन

सरकार ने ऑनलाइन हाजिरी की वकालत की। मास्साब ने विरोध की रट लगा ली। जबकि छात्रों के लेट होने पर सुनाते हैं। इसलिए सब विरोध कर रहे हैं। वैसे सरकार की मंशा पारदर्शिता से थी। पारदर्शिता से मास्साब की वॉट लग सकती थी। वॉट को उन्होंने ने नाट में बदल दिया। ऑनलाइन हाज़िरी तो उनके सोशल अकाउंट को देखकर भी जान सकते हैं। मास्साब ऑनलाइन हैं। स्कूल में मोबाइल बिना कहां काम चलता है। सरकारी स्कूल में टाइमपास तो बनता है। आजकल रील भी खूब बनता है। सरकारी स्कूल रियल में ऑनलाइन अच्छे हैं। मास्साब को पढ़ाने के अलावा भी अन्य सरकारी काम करने पड़ते हैं। उनको पसंद सिर्फ पढ़ाना है। लेकिन जितने देर पढ़ाने को मिलता है, वह तो ऑनलाइन व्यस्त हैं और शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त है। मास्साब कैंडी क्रश गेम में मस्त हैं। इस कारण बच्चों का भविष्य अस्त है। सरकार को चिंता थी तो चिंतन से निकला ऑनलाइन हाजिरी। जबकि मास्साब पहले से ही ऑनलाइन हैं।

सरकारी मास्साब को ऑफलाइन से कोई परहेज नहीं है। मास्साब अपने साहब लोगों की भी ऑनलाइन सहभागिता चाहते हैं। क्योंकि साहब नामक जीवों की दफ़्तर में बैठने-उठने का कोई टाइम नहीं है। वह चाहे जब आएं-जाएं। लेकिन मास्साब समझ नहीं रहे हैं। साहब पढ़ाई ज्यादा किए हैं। उनको तो हक़ है। साहब का इंतजार करना आम आदमी का फर्ज है। समय खर्चा करके कर्ज उनका उतारना है। मास्साब आवंटित पदों से इस्तीफा दिया, लेकिन मास्टरगिरी से इस्तीफा नहीं दिया। निजी विद्यालय के मास्साब की भी कोई सुधि लेगा। अखबार पटे हैं सरकारी मास्साब के ऑनलाइन दुःख से...। निजी विद्यालय के मास्साब तो यतिम हैं। हालांकि सरकारी मास्साब अपने बच्चों को निजी विद्यालय में पढ़ने भेजते हैं। यह उनका उपकार है। दरियादिली इसी को कहते हैं। सरकार को इसके लिए उनको अवार्ड देना चाहिए।

मास्साब अंगूठा दिखाने में शरमाते हैं क्योंकि वह शिक्षित हैं। सरकार को ऐसे बेतुके फैसले से बचना चाहिए। अंगूठा लगा तो बेचारे ठेंगा पर रख दिए जाएंगे। मास्साब अपना भला -बुरा समझते हैं। सरकार की मंशा भलीभांति समझ गए। विरोध में आवाज उठा दी। सरकार भी विरोध से डरती है। कड़े फैसले लेकर भी पलटती है। इस उलटन-

पलटन से मास्साब का घंटा बजा। मास्साब की जीत हुई। ऑनलाइन हाजिरी बैकफुट पर आई। ऑनलाइन हाज़िरी पर रोक लग गई। सरकार नहीं जानती थी कि मास्साब मोबाइल में ऑनलाइन है। मास्साब देश का भविष्य गढ़ रहे हैं। इसीलिए बच्चे पढ़ रहे हैं। मास्साब की चिंता जायज है। उन्हें सम्मान में भी मान देना चाहिए। फैसला भी देर आई लेकिन दुरुस्त नहीं आई। मास्साब टाइम पर हैं। उनका टाइम खराब करना किसी के बस की बात नहीं।मास्साब पर ही देश टिका है। इनसे पंगा नहीं लिया जा सकता। क्योंकि मास्साब ऑफलाइन हाजिर और मोबाइल में ऑनलाइन हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

राजनीति में मुंह लगे झूठ को लगे पैर

झूठ.झूठ है लेकिन यदि किसी के मुंह लग जाता है तो झूठ को मुंह लगाने वालों की पौ बारह हो जाती है। कहा जाता है कि झूठ पंगु होता है उसके पैर नहीं होते हैं ,लेकिन झूठ की जुगलबंदी राजनीति के साथ होने पर झूठ के पैर और,पर, दोनों लग जाते हैं और यह पैर न केवल चलते हैं वरन दौड़ते हैं और फलक में परिंदों की मानिंद झूठ अपने,पर, फैलाता रहता है। वैसे भी कोई भी चीज किसी के मुंह लग जाती है तो मुखर हो जाती है और झूठ जब किसी के मुंह लगता है तो मालवी में लबारी ,खड़ी बोली में झूठ का सरताज माना जाता है और अब जब झूठ को कोई तहजीब और सलीके से बोलता है तो हर कोई उसका एतबार कर लेता है।

वैसे भी झूठ चलता है ,देश के लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में झूठ खूब चला और इतना चला कि वह कईयों के मुंह लग गया। जब झूठ मुंह में लग गया तो लगा की राजनीति झूठ की वैसाखियों के सहारे ही चलती है ।वैसे भी जहां झूठ का बोलबाला रहता है सच का मुंह काला रहता है। मामले चाहे राजनीति में झूठ का हो या झूठ की राजनीति का हो, इश्क विश्क का हो नेता, फेता, अभिनेता का हो किसी न किसी रूप में झूठ हर जगह पसरा होता है।

राजनीति में पैर पसारने वाले झूठ को लेकर मॉर्निंग वॉक के दौरान सच झूठ पर बहस छिड़ी तो पं शिवनारायण जी बोले अरे झूठ वाले कहां से कहां पहुंच गए हैं । फर्श से अर्श पर मुकाम हासिल कर लिया । वे बोले झूठ बोलने वालों की प्रतियोगिता हो तो उसमें सबसे अव्वल हमारे नेता लोग ही आएंगे। जिनके मुंह झूठ ऐसा लगा लेता है कि सच उनके आसपास भटकता ही नहीं है। एक जमाना था जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप झूठ के बादशाह थे, विश्व में उन्होंने झूठ बोलने का रिकॉर्ड तोड़ रखा था। उन्होंने विश्व भर में साबित किया कि आज की दुनिया में सच कम दिखता और टिकता है लेकिन झूठ बिकता और मुकामी है ।

इस पर सुनील भैया बोले राजनीति ही नहीं साहित्य, खेलकूद,ऑफिस,सामाजिक सार्वजनिक जिंदगी में भी झूठ का बोलबाला है झूठ हदों को पार कर रहा है। आजकल झूठ का उपकरण मोबाइल बना हुआ है ।तो कहीं वाहन ,कहीं मीटिंग, तो कहीं पूजन, तो कहीं बाथरूम झूठ को चलाने वाले साधन बने हुए हैं । मोबाइल पर झूठ की इतनी मोबिलिटी है कि वह पल पल पर झूठ बुलवाता है।

घर से निकले पतिदेव को पत्नी का फोन आता है कि कहां हो तो वह झूठ का सहारा लेकर कहते हैं दोस्तों के बीच हूं और जब वह दोस्त को कॉल करती है तो कहता है कि मैं तो मैं तो आज बाहर हूं जब पत्नी पति का झूठ पकड़ती है तो झूठ को सच में बदलने के लिए पति अनेको झूठ बोलता है और आखिर में झूठ पत्नी को परास्त कर देता है और पत्नी सैयां झूठों का सरदार निकला समझ कर सच की पूजा अर्चना करना छोड़ देती है। इसी तरह झूठ वाहन पर सवारी करता है मोबाइल नहीं उठाने का कारण आदमी बोलता है कि ड्राइविंग कर रहा था। भले ही वह घर में ही बैठा हो ।जब किसी अफसर के पास किसी मातहत का फोन आता है साब घर पर है तो बाथरूम में है या ऑफिस में है तो मीटिंग में है ।

वे बोले एक उज्जैनी भैया थे उनके पास जब भी मैं फोन करता वह कहते मीटिंग में हूं । एक अफसर के मीटिंग में होने की बात तो समझ में आती है लेकिन व्यवसाया का मीटिंग में होने का झूठ उस वक्त पकड़ा जब वे दुकान पर साफ सफाई करते दिखे तो उनसे पूछा कि कौन सी मीटिंग में थे तो वे बोले सच में सच की साफ सफाई कर रहा था और झूठ मूठ चला दिया ।

वे बोले इसी झूठ ने भगवान को भी नहीं छोड़ा जब भी ओमानंद जी को फोन करते हैं तो वह कहलवाते हैं की ओम जी पूजन में है ,लेकिन ओमजी जब भी मिलते हैं वे मंदिर में दर्शन के लिए तो ठीक मंदिर की तरफ झांकते भी नहीं है ।जब घोर नास्तिक को पूजन में बैठने का कोई साहस दिला सकता है तो वह झूठ ही है ।वे बोले झूठ रंगीन नहीं होता है झूठ सफेद होता है जो अक्सर दिखता भी नहीं है और जब झूठ सफेद रंग पर सवार होता है तो सच के सारे रंगों को उड़ा देता है ।

इस पर वनीश जी बोले बगैर झूठ के तो काम नहीं चल सकता ,सच बोलो तो रिश्ते टूट जाते हैं झूठ बोलने से रिश्ते अटूट रहते हैं और आंखों में आंखें और मुंह में मुंह डालकर जब झूठ बोला जाता है तो झूठ सच को रफा दफा कर देता है ।इसीलिए पल भर के लिए भी झूठा ही प्यार करने के लिए प्रेयसीसे इसलिए कहा जाता है कि सच्चा प्यार तो फिसलन भरा है ।मीठा झूठ ,कड़वे सच से ज्यादा अहमियत वाला होता है । इसीलिए किसी शायर ने कहा है कि-

झूठ वाले कहां से कहां पहुंच गए
और हम थे कि सच बोलते ही रह गए ।

शैक्षिक भ्रमण

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षाविद् हैं और विद्यालयों को आनन्दघर बनाने के अभियान पर काम कर रहे हैं।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के आनंदमय पल

मुझे अच्छी तरह याद है कि अपने स्कूली दिनों में प्रत्येक वर्ष शैक्षिक भ्रमण करवाया जाया था। शैक्षिक भ्रमण के दौरान हम बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते, साथ में ही नाश्ता-भोजन करते, गीत गाते और वहां उपलब्ध पेड़-पौधों, जानवर, नदी-तालाब, तितली, भंवरे, चिड़ियां आदि के बारे में जानते-सीखते। ऐसे ही एक भ्रमण में मोर-मोरनी को पहली बार बिल्कुल करीब अपने पास दाना चुगते हुए, नाचते हुए देखा था। वहां मिले मोर के पंखों के रंगों को पहली बार छूकर अनुभव किया। बाद के बहुत वर्षों तक उस मोर पंख के टुकड़े हम कुछ बच्चों की किताबों में दबे रहे। मेरे स्कूल से एक शैक्षिक भ्रमण स्कूल से लगभग 3 किलोमीटर दूर दातासाई कुटिया में नवंबर महीने में पैदल जाया करता था। खजाने की खोज खेल सभी बच्चों को बहुत भाता था। इस खेल में दो दल बनाये जाते जिसमें बच्चे अपना दलनायक चुनते। दोनों दल के साथ एक-एक शिक्षक होते थे पर वे केवल सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए ही थे। इसमें खजाने की खोजकर खजाना प्राप्तकर आपस में बंटवारा करना होता था। उस क्षेत्र में निश्चित दूरियों पर आठ-दस जगह खजाने तक पहुंचने हेतु कुछ संकेत सूत्र लिखी पर्चियां रखी होती थीं।

शैक्षिक भ्रमण ज्ञान सर्जना का पुरातन फलक है तो नित नवल विधा, सीखने की अधुनातन ललक भी। हास, परिहास, उमंग, उत्साह का सरस निर्झर है तो लेखन, अभिव्यक्ति, संवाद कौशल का बौद्धिक विस्तार भी। शैक्षिक भ्रमण जीवन का वह पृष्ठ है जिस पर बच्चे अपने मनोभाव अनुभव की स्याही से दर्ज करते हैं। कक्षा कक्ष की दीवार की खिड़की से भीतर आती रचनात्मकता की मलय बयार है। शैक्षिक भ्रमण में बच्चे प्रकृति के मनमोहक आंगन में स्वयं करके सीखते हैं, एक-दूसरे से मिलकर कुछ नया रचते, गुनते और बुनते हैं जो उनके भावी जीवन पथ में सर्वदा सुवासित सुमनों की तरह खिले रहते हैं। और इस सीखने के आधार में वहां कोई दबाव या बोझ नहीं होता बल्कि खुशी, प्रसन्नता, आनंद के उल्लास उमंग में बच्चे किसी पहाड़ी झरने की तरह कर्म करते हुए परिवेश में उपलब्ध प्रकृति के उपहारों का न केवल आनंद लेते हैं बल्कि अवलोकन, अनुमान, तर्क, कल्पना, तुलना और संबंध विवेचन करते हुए नवल ज्ञान की सर्जना की ओर उन्मुख होते हैं। वास्तव में शैक्षिक भ्रमण कक्षा या विद्यालय को बाहरी दुनिया से जोड़ता है और यह बाहरी दुनिया वह दुनिया है जहां बच्चे पहुंचकर जिज्ञासा के पंख लगा कर अनंत आकाश में उड़ जाना चाहते हैं, पींठ पर शोध का आक्सीजन बांध सिंधु के रहस्य से परदा उठाना चाहते हैं। शैक्षिक भ्रमण न केवल बच्चों की मानसिक क्षुधा की पूर्ति करता है बल्कि आगे बढ़ने के तमाम रास्ते भी खोलता है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि अपने स्कूली दिनों में प्रत्येक वर्ष शैक्षिक भ्रमण करवाया जाया था। शैक्षिक भ्रमण के दौरान हम बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते, साथ में ही नाश्ता-भोजन करते, गीत गाते और वहां उपलब्ध पेड़-पौधों, जानवर, नदी-तालाब, तितली, भंवरे, चिड़ियां आदि के बारे में जानते-सीखते। ऐसे ही एक भ्रमण में मोर-मोरनी को पहली बार बिल्कुल करीब अपने पास दाना चुगते हुए, नाचते हुए देखा था। वहां मिले मोर के पंखों के रंगों को पहली बार छूकर अनुभव किया। बाद के बहुत वर्षों तक उस मोर पंख के टुकड़े हम कुछ बच्चों की किताबो में दबे रहे। मेरे स्कूल से एक शैक्षिक भ्रमण स्कूल से लगभग 3 किलोमीटर दूर दातासाई कुटिया में नवंबर महीने में पैदल जाया करता था। खजाने की खोज खेल सभी बच्चों को बहुत भाता था। इस खेल में दो दल बनाये जाते जिसमें बच्चे अपना दलनायक चुनते। दोनों दल के साथ एक-एक शिक्षक होते थे पर वे केवल सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए ही थे। इसमें खजाने की खोजकर खजाना प्राप्तकर आपस में बंटवारा करना होता था। उस क्षेत्र में निश्चित दूरियों पर आठ-दस जगह खजाने तक पहुंचने हेतु कुछ संकेत सूत्र लिखी पर्चियां रखी होती थीं। एक पर्ची प्राप्त करने के बाद दूसरे स्थान की पर्ची तक पहुंचने का संकेत मिलता था। पूरा खेल लगभग डेढ़-दो घंटे में पूरा होता। पल-पल रहस्य, रोमांच, उत्सुकता, खुशी, हार-जीत, आशा-निराशा के भाव आते जाते। दूसरे दल पर भी नजर रखनी पड़ती कि वह किस चरण में हैं। अंतिम पर्ची में खजाने का पता लिखा होता। खजाना मिलने पर उच्च स्वर में भारत माता की जय का जयघोष किया जाता ताकि दूसरा दल और सभी बच्चे समझ जायें कि पहले वाले दल ने विजयश्री प्राप्त कर ली है और वे अपना खोज अभियान बंद कर स्कूल ध्वज के पास एकत्र हो जायें। हारने वाला दल थोड़ी देर के लिए निराश जरूर होता पर अगले ही पल किसी दूसरे खेल या गतिविधि में लग उत्साह से भर जाते। ऐसे ही कबड्डी, खो-खो, शेर-बकरी, विष-अमृत, आम-नींबू-संतरा, नेता खोज और वालीबाल खेल खूब तालियां बटोरते। दोपहर का भोजन सभी साथ करते। शैक्षिक भ्रमण के दिन भोर होते ही हम नहा धोकर विद्यालय की यूनिफॉर्म पहन भोजन का टिफिन ले स्कूल की ओर निकल भागते। पूरे परिसर में एक अनकहा उल्लास छाया रहता। विद्यालय के रिक्शे में चूने की बोरी, बाल्टियां, दरियां, नाश्ते के लिए खरीदे गई भोजन सामग्री से भरे गत्ते रखे जाते। एक रिक्शे पर किराए पर लिया हुआ लाउडस्पीकर बांधा जाता और दो पंक्तियों में बच्चों को खड़ा कर सामने बैनर पकड़कर गीत गाते हुए और कुछ नारे बोलते हुए हम बच्चे उत्साह के साथ अपनी यात्रा शुरू करते। बाबा की कुटी बहुत रमणीक स्थान था, जहां बहुत सारे विभिन्न प्रजातियों के फलदार एवं शोभाकारी पेड़, फूलों की क्यारियां एवं तमाम तरह की चिड़ियों का बसेरा था। बगल से बरसाती नाला में निर्मल जल कल-कल करता संगीत सुनाता बहता रहता। पेड़ों में तमाम पक्षी कलरव करते चहचहाते उड़ते-बैठते रहते। यह हम सब बच्चों के लिए पहली बार हो रहा होता क्योंकि नगर में यह पक्षी दिखाई नहीं देते थे और जब हम पेड़ में बैठा हुआ कोई नया पक्षी देखते तो खुशी से चिल्ला उठते, ''देखो! यह नीलकंठ है, यह मैना है। यह तो सफेद चील है या यह कठफोड़वा है, जैसा कि हमारे शिक्षकों ने पहले पढ़ाया-बताया होता था।'' ऐसा लगता कि जैसे वहां उपस्थित सभी बच्चों में उस बच्चे ने यह कोई बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली हो। झाड़ियों में खरगोश और नेवले भी दिखायी दे जाते। सफेद खरगोश मैंने पहली बार वहीं देखा, अन्यथा भूरे रंग के खरहा को ही खरगोश समझता रहा था। पास के मैदान में गायें भी घास चरती रंभाती रहतीं। हर बार कुछ शरारती बच्चे महुआ के पत्तों का दोना बनाकर गाय के थनों से दूध भी निकाल लाते। कुछ बच्चे शिक्षकों की नजरें बचाकर पेड़ों पर चढ़ जाते तो कुछ साहसी बच्चे नाले में उतर नहा भी लेते। बहुत बाद में समझ में आया कि कोई भी गतिविधि शिक्षकों की दृष्टि से ओझल न थी। सुबह कुटिया पहुंचने पर मैदान में ही पेड़ों के नीचे दरियां बिछाकर सभी बच्चों के झोले रख दिए जाते। वहीं पर हम सबको नाश्ते में चना-लाई मिलता। कुएं का ठंडा पानी पीकर तन-मन में ऊर्जा का संचार हो जाता।

शैक्षिक भ्रमण केवल घूमना और मनोरंजन भर नहीं थे बल्कि प्रकृति के विशाल पृष्ठों पर ज्ञान निर्माण के हमारे अनुभवों का अंकन ही थे। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है एक संवेदनशील, प्रकृति मित्र, मानवीय चेतना एवं समता-ममता युक्त मेरे व्यक्तित्व के बेहतर निर्माण में उन शैक्षिक भ्रमण आयोजनों का व्यापक प्रभाव रहा है। देखा जाये तो शैक्षिक भ्रमण मानवीय मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चे नेतृत्व, लोकतांत्रिकता, साहस, सामूहिकता, परस्पर सहयोग एवं विश्वास, प्रेम, सद्भाव, सहिष्णुता, निर्भयता के भाव भ्रमण के दौरान सीखते हैं। शैक्षिक भ्रमण बच्चों के अंदर कार्य योजना, समीक्षा, कल्पना, क्रियान्वयन एवं प्रबंधन के गुण भी विकसित करता है। एक दूसरे की मदद करते हुए लक्ष्य तक पहुंचना और सुख-दुख को समान रूप से साझा करना भी सीखते हैं। एक शिक्षक के रूप में मैं शैक्षिक भ्रमण को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक सशक्त माध्यम मानता हूं। क्योंकि यह विषवस्तु को रटाने की पद्धति से मुक्त कर प्रत्यक्ष सीखने को बढ़ावा देता है। शैक्षिक भ्रमण हमें बेहतर मनुष्य होने का भाव भरता है।

हिंसा... जाए तो अब कहां जाए!

हिंसा परेशान है कि अब जाए तो जाए कहां। यूक्रेन-रूस का मसला निपट ही नहीं रहा है तो वहां के बारे में कोई नहीं बोलता कि यहां हिंसा की कोई जगह नहीं है। इजराइल-गजा का खून-खराबा रोज की बात है...! एक शख्स के कान को खुजलाते गोली निकली तो दुनिया से हिंसा की जगह ही खत्म कर दी... और जहां सैकड़ों मौत हिंसा में रोज हो रही हैं, वहां कोई मुंह नहीं खोल रहा है।

प्रकाश पुरोहित

'हिंसा' को पहले यह मुगालता था कि उसकी दुनिया भर में जगह है। खास तौर पर जो हथियार बनाने और खरीदने वाले देश हैं, वहां तो उसे लगता था कि एक मायका है तो दूसरा प्रेमी का मोहल्ला! उसे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि उसे कभी यूं देश-निकाला दिया जाएगा।

बताइए, जिस अमेरिका में छह साल का छात्र अगर टीचरजी को गोली मार सकता है तो वहां से उसे कौन हिला सकता है, हिंसा सोचने लगी। ट्रंप के कान को खरोंचती एक गोली क्या निकल गई, सभी 'हिंसा' के पीछे पड़ गए हैं। ट्रंप को जी भर कर बुरा-बुरा कहने वाले बाइडेन ने भी कह दिया कि 'अमेरिका में हिंसा की कोई जगह नहीं है।'

हिंसा को बुरा लग रहा है कि पूरी दुनिया में आधे देश तो अमेरिका से हथियार खरीदते हैं, तो कोई शांति-पाठ के लिए तो खरीदे नहीं होंगे। यह कैसे संभव है कि हिंसा के लिए तो हथियार बनाते और बेचते हैं, फिर यह भी कि 'हिंसा के लिए अमेरिका में कोई जगह नहीं है।'

हिंसा परेशान है कि अब जाए तो जाए कहां। यूक्रेन-रूस का मसला निपट ही नहीं रहा है तो वहां के बारे में कोई नहीं बोलता कि यहां हिंसा की कोई जगह नहीं है। इजराइल-गजा का खून-खराबा रोज की बात है...! एक शख्स के कान को खुजलाते गोली निकली तो दुनिया से हिंसा की जगह ही खत्म कर दी... और जहां सैकड़ों मौत हिंसा में रोज हो रही हैं, वहां कोई मुंह नहीं खोल रहा है।

फ्रांस के राष्ट्रपति ने तो राजनीति और लोकतंत्र से हिंसा को बदर कर दिया है। राजनीति में अगर हिंसा को जगह नहीं दी गई तो हिंसा बेचारी जाएगी कहां! उसकी तो शरणगाह ही राजनीति है! हिंसा को लोकतंत्र पर बड़ा गुस्सा आ रहा है कि इसकी वजह से ही तो बैठने की जगह मिलती है और इसी की आड़ लेकर जगह नहीं दी जा रही है। यह तो दोगलापना है ना! जापानी प्रधानमंत्री ने कहा है- लोकतंत्र को चुनौती देने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा के खिलाफ मजबूती से खड़ा होना चाहिए।

हो सकता है, इस बयान का यह असर हो कि

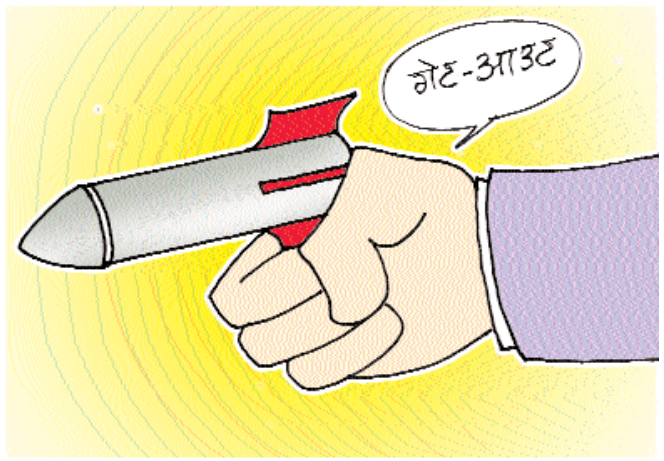

लोकतांत्रिक देश... और ज्यादा हथियार खरीदने लगें और शिक्षा, स्वास्थ्य का बजट कम कर दें। मजबूती से खड़े होने के लिए हथियार तो जरूरी हैं ना! मच्छर थोड़े ही है हिंसा... कि हाथ से मार दी। फिर मच्छर मारना भी तो हिंसा ही है!

पंचशील के अहिंसक देश भारत के प्रधानमंत्री ने भी कहा है कि राजनीति और लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। यहां हिंसा को खुशी मिली है कि राजनीति और लोकतंत्र- के सिवा उसके लिए अक्खी जगह खुली पड़ी है। मॉब-लिंचिंग हो रही है... कपड़ों से पहचान कर हत्या कर रहे हैं, प्रवचन में भगदड़ है, थानों में कैदी जान दे रहे हैं, पुल गिर रहे हैं और... इन सबके खिलाफ चुप्पी भी तो हिंसा को रहने लायक जगह दे ही रही है, हिंसा खुश है, जहां चाहे अपना स्थान ग्रहण कर सकती है। देख ही रहे हैं कि हिंसा को कहीं भी जगह तलाशनी नहीं पड़ रही है, लोग खुद ही जगह दे रहे हैं।

देखा पढ़ा

ब्रजेश कानूनगो

दुनिया की सैर : नए विकल्प

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि यदि अपने देश को जानना है, संस्कृति को समझना है तो हमे रेल यात्राएं करना चाहिए, लोगों के बीच जाना चाहिए। उस दौर में यह एक अच्छा तरीका हो सकता था जब हम रेल यात्रा से देश और दुनिया को जान सकते थे। बापू ने यह करके दिखाया भी था। भारतीय समाज को समझने में उनका यात्राओं का यह तरीका बहुत कारगर भी रहा। एक अन्य तरीके से भी यह कार्य संभव होता रहा है। किताबों के जरिए भी संसार को जाना गया है। उन लोगों की लिखी पुस्तकों को पढ़कर जिन्होंने दुनिया को प्रत्यक्षतः देखा, लोगों के बीच गए,जीवन शैली को देखा, वहां की प्रकृति को अनुभव किया और फिर उन अनुभवों को अपनी रचनाओं में,वृतांतों में सहेज लिया। ऐसी पुस्तकों और उन यात्रियों के लिखे को पढ़ेंगे तो भी हम देश और दुनिया को बहुत कुछ जान समझ सकते हैं। बहुत से लोगों ने इसका लाभ भी उठाया है। यात्रा वृतांत को पढ़ते हुए, सैलानियों और विचारकों द्वारा लंबे समय में निष्ठा, लगन और संघर्ष से अर्जित अनुभवों और विश्लेषणों को उनसे सुनकर, चर्चा करके या उनकी लिखी पुस्तकों को पढ़कर भी दुनिया को समझने की अपनी जिज्ञासा को शांत किया जा सकता है। या तो यह सब हम खुद करें या पुस्तकों से गुजर कर थोड़ा सा उनमें अपने आपको अनुभूत करें। पहले विकल्प से दूसरा विकल्प सामान्यतः सरल कहा जा सकता है।

समय के साथ बहुत कुछ बदलता जाता है। आज का समय टेक्नोलॉजी, इंटरनेट और डिजिटल मीडिया का समय है। पुस्तकों का स्थान दृश्य श्रव्य माध्यम ने ले लिया है। अब विचारक, विशेषज्ञ और सैलानी सब लोग इसी माध्यम पर सक्रिय हैं। खासतौर से जो ब्लॉगर्स होते हैं जो ट्रेवल व्लॉग बनाते हैं, या कोई अन्य विषय पर अपनी बात कहते हैं वे सब वीडियो के रूप में आज इंटरनेट पर, यूट्यूब पर उपलब्ध होते गए हैं। हम उनको देखकर, महसूस करके, उनके साथ यात्राएं करते हुए भी बहुत सी चीजों को जान समझ सकते हैं। बदलती परिस्थितियों और तन मन के सामर्थ्य के चलते हमने यही विकल्प चुना। पिछले कुछ समय में घर बैठे दुनिया भर की मानस यात्रा यूट्यूब पर करते रहे और जो लोग इस सफर में हमारे माध्यम बने, किस तरह से यह सब होता रहा, पाठकों से साझा करने का मन हो रहा है।

कोरोना काल के कठिन समय जब घरों में कैद होकर कोई अन्य आउटडोर उपाय नहीं रहा था तब हम लोग यूट्यूब की ओर मुड़े थे। टीवी के रेगुलर चैनल देखना तो काफी पहले बंद कर दिया था लेकिन जब हमें यूट्यूब पर कुछ ट्रेवल वीडियो देखने को मिले तो फिर हमारा रुझान दुनिया देखने की तरफ होता चला गया। अनेक ट्रेवलर,यूट्यूबर हमारे आभासी दोस्त बनते चले गए। यद्यपि सबसे पहले हमने जवाहरलाल नेहरू जी की किताब 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' पर आधारित दूरदर्शन के धारावाहिक 'भारत एक खोज का' पुनरावलोकन यूट्यूब पर किया। पंडित नेहरू ने जिस दृष्टि से दुनिया को देखा, भारत को देखा, भारत के इतिहास को देखा उससे हमे विश्व पर्यटन की मानस यात्रा करने की इच्छा प्रबल होती गई।

सबसे पहले यूट्यूब पर हिंदी में दिल्ली के हरीश बाली जी का वीजा टू एक्सप्लोर नामक ट्रेवल व्लॉग देखने को मिला। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर इस काम में हाथ डाला था, लगभग पूरा भारत घूम चुके हैं। उनकी तीन लोगों की टीम होती है और वह हिंदी में अपनी यात्राओं में उस पर्यटन क्षेत्र को समग्रता से बहुत अच्छे से फिल्माते हैं। स्थान के ऐतिहासिक, पर्यटन, प्राकृतिक सौंदर्य, जीवन शैली,खान पान जैसे सभी पक्षों को अपने वीडियो में दर्शकों को बहुत सादगी से परोस देते हैं। बाली लगभग पूरे भारत वर्ष की सैर करते हुए अपने दर्शकों को भी करवा चुके हैं। भारत के बाहर फिलहाल उन्होंने केवल इंडोनेशिया, बाली की यात्रा की है। ट्रेवल व्लॉग से इस पहले परिचय और हरीश बाली के साथ मानस पर्यटन के बाद पचीसों हमारे नए दोस्त बनते गए।

माउंटेन ट्रेकर के वरुण वागीश, नोमेडिक इंडियन के दीपांशु, इंडियन टूर के तोरवशु, नोमेडिक शुभम के शुभम, विश्व साइकिल यात्री साइकिल बाबा के डॉक्टर राज, बंसी वैष्णव, पैसेंजर परमवीर के परमवीर, डॉक्टर यात्री के नवांकुर, मनीष कुमार सोलंकी, देसी कपल ऑन द गो के मेघा और सौरभ, आरेक्सप्लोरर के अगम्य सक्सेना, जैसे भारतीय ब्लॉगर, ट्रेवलर के अलावा अजरबैजान के दाऊद अकुजादा, जॉपिंग प्लेसिस के युवा दंपत्ति, गैब्रियल ट्रेवलर, डेल फिलिप, क्रिस लुइस, डेल मैक्स,बैग पैक फैमिली का परिवार जैसे अनेक मित्रों के साथ हमने दुनिया और उसके सौंदर्य को स्क्रीन पर बहुत निकट से देखा। संसार के विभिन्न समुदायों की संस्कृति और उनकी जीवन शैली का साक्षात्कार किया। मेरा मानना है कि यदि समय और सुविधा हो तो एक बार अवश्य ही इन ब्लॉगर ट्रेवलरों के विडियोज को देखना हमारे हित में ही होगा। सुकून दायक होगा।

आगे के मेरे आलेखों में उन सबकी अलग-अलग विशेषताओं और पर्यटन के तौर तरीकों और उनके साथ देखे, घूमे,समझे दुनिया के विभिन्न हिस्सों की बात कहने की कोशिश अवश्य रहेगी।

सड़क पर भीख मांगकर किया विरोध प्रदर्शन

अंशकालीन कर्मचारियों को समय पर दिया जाए वेतन, अटल सेना ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। अटल सेवा के तत्वावधान में गुरुवार को छात्रावास के अंशकालीन कर्मचारियों का वेतन समय पर मिलने और वेतन वृद्धि को लेकर मुख्यमंत्री और आदिम जाति कल्याण विभाग मंत्री के नाम से जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। इससे पूर्व संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने सैंकड़ों की संख्या में शहीद भवन से रैली निकली निकाली और महिला कर्मचारियों ने शहर में भीख मांग कर विरोध प्रकट किया। इस संबंध में संगठन के प्रांताध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केन्डु बाबा) ने बताया कि एससी व एसटी छात्रावास में कार्यरत अंशकालीन कर्मचारियों को लगभग एक वर्ष से वेतन नहीं मिला है। केन्डु बाबा ने बताया कि समय पर वेतन नहीं मिलने से उनको अपनी घर गृहस्थी चलाने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। बच्चों की पढ़ई पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। परिवार में कोई बीमार हो जाए तो उसका इलाज भी नहीं हो पाता है। केन्डु बाबा ने बताया कि ऐसा एक परिवार में हुआ भी है कि पैसों के अभाव में कुछ परिवार के सदस्य की मृत्यु भी हो गई है। अंशकालीन के नाम पर शासन इनसे पूर्ण समय याने 8 घंटे कार्य करवाती है। बहुत से कर्मचारी पूर्णत इसी पर निर्भर हैं उनके पास अन्य दूसरा कार्य नहीं है। किसी कर्मचारी के घर में दूसरा कमाने वाला नहीं है। कोई विधवा है कोई परित्यक्ता है। ज्ञापन में मांग की गई है कि अंशकालीन कर्मचारियों को कलेक्टरेट से वेतन दिया जाए और हर माह समय पर वेतन दिया जाए। इस अवसर पर रामलाल धुर्वे, शोभा धुर्वे, रानी धुर्वे, शांति बाई, गीता मरकाम, सविता धुर्वे, ममता धाड़से, रमेश कुमार, फुलवंती उइके, किरण सोनी, अनीता धुर्वे, प्रमिला सोनारे, चंपावती, राधा धुर्वे, वंदना पारधे, बबलू गायकवाड, दुर्गाबाई, श्रीमती दुर्गा हिवराय सहित बड़ी मौजूद थी।

सावलमेढ़ा पंचायत ने बनाया अपना बाल संरक्षण कोष

प्रदेश की संभवत: पहली अनूठी पहल

बैतूल। भैंसदेही विकासखंड की सावलमेढ़ा पंचायत की पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति की अनूठी पहल की है। समिति ने बाल संरक्षण के मुद्दे को प्राथमिकता से लेते हुए बाल संरक्षण कोष बनाने की पहल शुरू की। समिति ने देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के संरक्षण के लिए यह कोष बनाया है। इस कोष के लिए सरपंच श्रीराम भलावी ने अपने एक माह का मानदेय लगभग 4200 रुपये, उपसरपंच रामकिशोर दहीकर, सचिव रमेश बारस्कर, रोजगार सहायक सुश्री कल्पना कासदेकर एवं मोबिलाईजर सुश्री जैवन्ती सरियाम द्वारा 1000 रुपए की राशि देना तय किया। उल्लेखनीय है कि

पंचायत के सभी पंच, जिन्हें कोई निश्चित मानदेय भी नहीं मिलता है, उन्हें वर्ष भर में बैठकों में शामिल होने का सिर्फ भत्ता मिलता है। उन्होंने वह भत्ता भी बच्चों के संरक्षण कोष में देने का फैसला लिया है एवं निर्माण समिति के अध्यक्ष कादर शाह द्वारा 1100 रुपये संबंधित क्षेत्र के वन अधिकारी (रेंजर) मानसिंह परते, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस (एसडीपीओ) भूपेंद्र सिंह मौर्य व थाना प्रभारी सुश्री अंजना धुर्वे द्वारा भी 1100 रुपये, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता तथा बीट कांस्टेबल द्वारा भी 500 रुपये की राशि देना तय किया है। वर्तमान की स्थिति में यह राशि 29,000 रुपयों के आसपास होगी, ग्राम सभा के दिन यह राशि बढने की भी संभावना है। समिति ने यह भी निर्णय लिया है कि पंचायत में अब बाल संरक्षण कर भी लिया जाएगा जिसकी शुरुआत भी अगस्त माह में आयोजित होने वाली ग्राम सभा से ही की जाएगी। ज्ञात हो कि पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समितियों का गठन महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वावधान में हुआ है। आवाज संस्था द्वारा परवाह परियोजना के अंतर्गत बाल संरक्षण हेतु पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समितियों के प्रशिक्षण और बैठक की जा रही हैं और इसके उत्साहजनक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। इसकी एक बानगी सांवलमेंढ़ा पंचायत में देखने को मिली। इस बार स्थानीय पंचायत भवन में बैठक आयोजित कराई गई जिसमें बीट कांस्टेबल अजय भट्ट के साथ-साथ अन्य सभी सदस्य भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस बार की बैठक में ड्राप-आउट बच्चों और देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के संबंध मे विस्तृत चर्चा हुई। इस पूरी पहल के बारे में बताते हुए आवाज संस्था के जिला समन्वयक भूपेन्द्र लोखंडे कहते हैं कि हमें बेहद खुशी हो रही है कि पंचायत ने बाल संरक्षण के क्षेत्र में अपनी भूमिका को समझा है। श्री लोखंडे ने कहा कि संभवत यह प्रदेश में पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति द्वारा बाल संरक्षण कोष बनाने का पहला मामला है। उन्होंने इस पहल में आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग हेतु महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपनी टीम के सदस्य विनीत धोटेकर, संगीता लिखितकर तथा भावना मस्की के प्रयासों की प्रशंसा की।

विशाल हिन्दू वाहिनी महिला संगठन ने किया पौधारोपण

बैतूल। वर्तमान समय में महिलाएं रसोई के साथ जॉब करते हुए समाज हित में भी अपना उल्लेखनीय योगदान निभा रहीं हैं। महिलाएं आज सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दे पर प्रखर हैं और पर्यावरण संरक्षण को भी गंभीर विषय समझ रहीं हैं। विशाल हिन्दू वाहिनी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीतू चोलिया की अध्यक्षता में शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय में 11 लक्ष्मीतरु पौधों का रोपण किया और उनके पालन एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी गायत्री परिवार द्वारा ली गई। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष डॉ.सुषमा सोनी एवं गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पूर्व सैनिक मधु वर्मा, पर्यावरण समन्वयक मुकेश गुड्डा वर्मा, अनिल साहू, आदर्श वर्मा,श्री कवडकर तथा संगठन की प्रेमलता मालवीय, अर्चना वर्मा, मीरा वर्मा, मीनाक्षी सोनी, मेघा गोयल, वान्या गोयल, प्रांजली तन्हालकर, संध्या पाल, निर्मला कवडकर आदि पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

बैतूल में मेडिकल कॉलेज खोलने की प्रक्रिया शुरु

जिला अस्पताल उन्नयन के लिए टेंडर जारी, बैतूल विधायक के प्रयासों से जिलेवासियों को मिलेगी बेहतर स्वास्थ्य सुविधा की सौगात

बैतूल। आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए शासन स्तर से प्रक्रिया तेज हो गई है। मध्य प्रदेश के सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा बैतूल सहित प्रदेश के दस जिलों में पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज स्थापना और जिला अस्पताल के उन्नयन के लिए टेंडर जारी कर ऑनलाइन निविदा बुलाई गई है। जिला प्रशासन द्वारा बैतूल में मेडिकल कॉलेज की स्थापना के लिए कोसमी ग्राम के समीप लगभग 30 एकड़ भूमि चिन्हित की जा चुकी है।

हेमंत के प्रयासों से स्वीकृति- श्बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल के प्रयास से तात्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा बीते विधानसभा चुनाव के पूर्व बैतूल में मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा कर स्वीकृति दी गई थी। मेडिकल कॉलेज खुलवाने की मुहिम में श्री खण्डेलवाल के साथ उस दौरान सांसद डीडी उइके एवं आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे भी शामिल रहे थे।

नए सीएम से भी की मांग...- मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के नेतृत्व में मप्र में भाजपा की सरकार बनने के बाद बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल ने मुख्यमंत्री से हुई मुलाकातों के दौरान बैतूल में मेडिकल कॉलेज शुरु करवाने की मांग की जा रही थी। बैतूल विधायक द्वारा किये जा रहे सतत प्रयासों के सकारात्मक परिणाम जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना को लेकर शासन द्वारा कार्यवाही करने के रूप में सामने आ रहे हैं।

इन जिलों के लिए कार्यवाही शुरू..- बैतूल जिले में मेडिकल कॉलेज स्थापना को लेकर शासन द्वारा सैद्धांतिक स्वीकृति देने के बाद मेडिकल कॉलेज के लिए भूमि चिन्हित करने सहित अन्य कार्यवाही शासन स्तर से शुरु हो चुकी है। बैतूल सहित कटनी, मुरैना, पन्ना, बालाघाट, भिंड, धार, खरगौन, सीधी, टीकमगढ़ जिलों में सार्वजनिक निजी भागीदारी 'पीपीपी मोड' पर सौ सीट के मेडिकल कॉलेज की स्थापना और जिला अस्पताल के उन्नयन के लिए कार्यवाही प्रारंभ हो चुकी है।

पीपीपी मोड पर होगा संचालन...- इसी तारतम्य में डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड मेडिकल एजुकेशन मध्यप्रदेश द्वारा टेंडर जारी कर ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की गई है। निविदा स्वीकृति के बाद चयनित बोलीदार के साथ शासन द्वारा पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज निर्माण, वित्त, संचालन, रखरखाव, प्रबंधन, संवर्धन, संचालन एवं जिला अस्पताल के प्रबंधन के संबंध में अनुबंध किया जायेगा।

कोसमी के समीप चिन्हित की भूमि....- बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल के प्रयासों से बैतूल में मेडिकल कालेज स्वीकृति के बाद मेडीकल कॉलेज की स्थापना को लेकर शासन प्रशासन स्तर से कार्यवाही चल रही है। कलेक्टर के निर्देश पर राजस्व अधिकारियों द्वारा मेडीकल कालेज के लिए कोसमी ग्राम के समीप लगभग तीस एकड़ भूमि चिन्हित कर ली है। साथ ही चिन्हित भूमि को मेडिकल कॉलेज के लिए आरक्षित,आवंटित करने की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

विभागों के अधिकारी, कर्मचारी कार्यस्थल पर समय पर हों उपस्थित : नर्मदापुरम संभागायुक्त श्री तिवारी

महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम हेतु स्वास्थ्य विभाग को दिए दिशा-निर्देश

बैतूल। नर्मदापुरम संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी ने सभी विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों से कहा कि हम बड़े सौभाग्यशाली है कि हमें शासकीय सेवा का अवसर मिला है। अपनी सर्विस पूजा के समान है यह सोचकर चले। अधिकारी, कर्मचारी कार्यालय में आए लोगों के साथ विनम्र रहे और अच्छा व्यवहार करें। उन्होंने विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों को कार्यालय में समय पर उपस्थित होने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अज्ञानता के अभाव में बच्चियों को खतरे में न डाले। सर्वाइकल कैंसर बीमारी को रोकने अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर लोगों में जागरूकता लाए। नर्मदापुरम संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी गुरुवार को कलेक्टोरेट सभागार में विभागवार कार्यों की समीक्षा कर रहे थे।

इस अवसर पर कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, एडीएम मकसूद अहमद, मुख्य नगरपालिका अधिकारी ओमपाल सिंह भदौरिया, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उईके, सिविल सर्जन डॉ.अशोक बारंगा, एसडीएम सहित अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे। बैठक में नर्मदापुरम संभागायुक्त श्री तिवारी ने स्वास्थ्य विभाग, एमपीईबी, शिक्षा विभाग, लोक निर्माण विभाग, जल संसाधन सहित अन्य विभागों के प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा की।

प्रधानमंत्री आवास योजना....

श्री जैन ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत वर्ष 2022 से नया लक्ष्य नहीं मिला है। जिले में वर्ष 2016-17 से वर्ष 2021-22 तक लक्ष्य के अनुरूप 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण है। स्वीकृत 704866 लक्ष्य के विरूद्ध 67142 आवास पूर्ण हो चुके है। साथ ही 822 आवासों का कार्य प्रगतिरत है। इसके अलावा सीएम हेल्पलाइन में विगत 4 माह फरवरी 2024 में ए ग्रेड के साथ 81 प्रतिशत, मार्च में बी ग्रेड के साथ 79 प्रतिशत, अप्रैल में ए ग्रेड के साथ 82 प्रतिशत एवं मई 2024 में 83 प्रतिशत रहा। वर्तमान में 50 दिवस के अधिक 244 लंबित शिकायतें है, जिसका निराकरण किया जा रहा है। श्री जैन ने बताया कि शासन द्वारा जिले को आगामी 3 वर्ष में स्व-सहायता समूह के 37 हजार सदस्यों को लखपति बनाने का लक्ष्य दिया गया है। आय-सहायता योजना के तहत क्लस्टर आधारित मॉडल के माध्यम से समूह की सदस्यों को आय-सहायता गतिविधियां बैकयार्ड पोल्ट्री, बैकयार्ड गोटरी, मल्टी-लेयर हॉर्टिकल्चर एवं सेरीकल्चर) को अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। इसके अलावा कोठीबाजार बस स्टैंड के पीछे रिक्त भूमि पर 4.15 करोड़ की लागत से आजीविका प्लाजा का निर्माण किया जाएगा। इसमें 68 दुकान एवं दीदी कैफे सहित अन्य आकर्षक व्यवस्थाएं होगी। साथ ही जिले में 14 सामुदायिक पोषण वाटिकाएं तैयार की जा रही है, जिन पर मोरिंगा, सब्जियां एवं फलदार वृक्षों की खेती कर भूमिहीन समूहों की आय को बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा।

बैतूल एवं मुलताई जल संसाधन संभाग के कार्यों की समीक्षा

बैतूल जिले के अंतर्गत 10 उपसंभाग बैतूल, भैंसदेही, भीमपुर, चिचोली, घोड़ाडोंगरी, आमला, मुलताई, आठनेर, प्रभातपट्टन एवं शाहपुर में 5 मध्यम परियोजना निर्मित है एवं 181 लघु योजनाएं है, इस प्रकार कुल 186 सिंचाई योजनाएं क्रियान्वित है। 05 मध्यम एवं 186 लघु योजनाओं की कुल रबी सिंचाई क्षमता 82020 हेक्टेयर है। 01 लाखापुर जलाशय से बैतूल शहर के पेयजल हेतु पानी आरक्षित रखा गया एवं 01 खंडारा जलाशय से ग्रामीणों के निस्तार, पशुधन के पेयजल हेतु पानी आरक्षित रखा गया है। इसके अलावा मप्र शासन द्वारा 06 मध्यम परियोजनाएं गढ़ा, घोघरी, मेंढा, सीतलझिरी, वर्धा एवं निरगुड़ निर्माणाधीन योजनाएं है, जिनकी रूपाकिंत सिंचाई क्षमता 44687 हेक्टेयर तथा लागत 1426.35 करोड़ है। सभी योजनाओं का कार्य प्रगतिरत है। इसी प्रकार से 10 लघु योजनाओं का निर्माण कार्य प्रगतिरत है,जिनकी रूपाकिंत सिंचाई क्षमता 3660 हेक्टयर एवं लागत राशि 91.30 करोड़ है।

पीएम स्वनिधि योजना में हितग्राहियों को ऋण

मुख्य नगरपालिका अधिकारी ओमपाल भदौरिया ने बताया कि पीएम स्वनिधि योजना में हितग्राहियों को 10 से 50 हजार रुपए तक का ऋण दिया जा रहा है। इसके अलावा दीनदयाल रसोई योजना के अंतर्गत जिले में बैतूल श्रेणी-बी, सारणी श्रेणी-सी, आमला श्रेणी-सी तथा मुलताई श्रेणी-सी में रसोई केन्द्र संचालित है। बैतूल में 300 से 350 लोग प्रतिदिन दीनदयाल रसोई में 5 रूपए में भोजन करते है। इसी तरह आमला, सारणी तथा मुलताई में 200 से 250 लोग प्रतिदिन 5 रूपए में भरपेट भोजन करते है।

श्री भदौरिया ने बताया कि अमृत 2.0 योजना के अंतर्गत बैतूल जिले के 10 निकायों में 82.852 करोड़ की 26 परियोजनाएं है। इनमें वॉटर बॉडी योजना अमृत 2.0 के तहत 13.87 करोड़ की 9 परियोजना में से जिला समिति ने 8 अनुमोदित की है। इसी तरह जल प्रदाय योजना अमृत 2.0 के अंतर्गत जिले में 66.19 करोड़ की 8 परियोजना जिला समिति से अनुमोदित की गई है। पार्क निर्माण योजना अमृत 2.0 के तहत 2.792 करोड़ की 9 में से 8 को जिला समिति ने अनुमोदन किया है।

नाम की पदोन्नति से शिक्षकों की तौबा, 109 की हुई काउंसलिंग

40 शिक्षकों ने नकारा प्रस्ताव, ना मिलेगा वेतनमान, न आर्थिक लाभ

बैतूल। शासन के निर्देशों के मुताबिक शिक्षा विभाग में पिछले लंबे समय से पदोनति की राह तक रहे शिक्षकों को प्रभार की पदोनति का झुनझुना पकड़ा तो दिया गया, लेकिन उन शिक्षकों को यह पदोन्नति जरा भी रास नहीं आ रही है, जिनकी पदोन्नति वर्ष 1994 के बाद हुई है। इसकी वजह यह सामने आ रही है कि शिक्षकों को पदोन्नत तो कर दिया जाएगा, लेकिन उनके वेतन भत्तों-वेतनमान के लाभ सहित अन्य आर्थिक लाभों में परिवर्तन होगा या नहीं, इसकी स्थिति स्पष्ट नहीं की गई है। जानकारी मिली है कि केवल नाम की यह पदोन्नति शिक्षा विभाग के शिक्षकों को जरा भी रास नहीं आ रही है। करीब 3 दर्जन शिक्षकों ने पदोन्नति का प्रस्ताव ठुकरा कर विभाग को लिख कर दिया है कि वे पुरानी पदस्थापना पर ही काम करना चाहते हैं। उन्हें प्रभार वाली पदोन्नति की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे में विभाग के सामने बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। वहीं शासन का सिरदर्द भी बढ़ने की पूरी संभावना नजर आ रही है।

प्राथमिक से मिडिल और हाईस्कूल में दी जानी है पदोन्नति- दरअसल शासन द्वारा प्राथमिक स्कूल से मीडिल और मीडिल से हाई स्कूल में शिक्षकों को पदोन्नत किए जाने की कवायद शुरू की गई है, जो काफी लंबे समय से लंबित पड़ी हुई थी। समय-समय पर शिक्षक संगठनों ने पदोन्नति का लाभ प्राप्त करने के लिए आंदोलन भी किए। इसके बाद शासन ने पदोन्नति का रास्ता तो साफ कर दिया, लेकिन पदोन्नति के बाद मिलने वाले आर्थिक लाभों से शिक्षकों को वंचित किया जा रहा है। सूत्र बताते हैं कि शिक्षकों को प्रभार वाली पदोन्नति दिए जाने के लिए शिक्षा विभाग, जिला शिक्षा केन्द्र और ट्रायबल विभाग द्वारा काउंसलिंग तो की जा रही है, अभी तक शिक्षा विभाग द्वारा तीन अलग-अलग चरणों में लगभग 109 शिक्षकों की काउंसलिंग की जा चुकी है। इनमें से करीब 40 शिक्षक ऐसे हैं, जिन्होंने प्रभार वाली इस पदोन्नति को सिरे से नकार दिया है। कुछ शिक्षकों ने नाम ना प्रकाशित करने की शर्त पर बताया कि जो शिक्षक अपने आवास से 2 से 4 किलोमीटर दूर शाला में पदस्थ हैं, यदि उसे बिना लाभ के 10 से 15 किलोमीटर दूर पदोन्नति पर पदस्थापना दी जाएगी तो शिक्षक वहां जाना क्यों पसंद करेंगे ? वेतन भी कम मिलने से खर्च तो बढेगा ही, साथ ही आर्थिक लाभ से वंचित होना पड़ सकता है।यही वजह है कि शिक्षक पशोपेश में है।

पुराने शिक्षकों की बल्ले-बल्ले, नए शिक्षक परेशान- इस पूरे मामले को लेकर पुरानी पेंशन बहाली आंदोलन के जिला अध्यक्ष रवि सरनेकर ने बताया कि इस मामले में सबसे ज्यादा नुकसान उन शिक्षकों को भुगतना पड़ रहा है, जिनकी नियुक्ति वर्ष 1994 के बाद हुई है। वर्ष 1994 के पूर्व भर्ती शिक्षकों को भारी भरकम वेतन के साथ पेंशन ग्रेज्युटी आदि का भरपूर लाभ मिल रहा है, लेकिन 1994 के बाद जिन शिक्षकों की भर्ती की गई है। उन्हें ना ही पेंशन का लाभ दिया जाएगा, ना ही अन्य आर्थिक लाभ। कुल मिलाकर पुराने शिक्षकों की पदोन्नति किए जाने की आड़ लेकर 1994 के बाद भर्ती किए गए शिक्षकों को भी प्रभार वाली पदोन्नति में बिना लाभ दिए रगड़ा जा रहा है। यही वजह है कि कई शिक्षकों ने यह तय किया है कि वे पूर्व में जहां पदस्थ है वे वहाँ रहकर अपनी सेवाएं शाषन को प्रदान करेंगे।

इनका कहना...

पदोन्नति के लिए शिक्षकों की काउंसलिंग की जा रही है। पदोन्नति नहीं लेने वाले शिक्षकों की संख्या ज्यादा तो नहीं है। किंतु जो पदोन्नति लेना चाहेंगे, उन्हें दी जाएगी।

-अनिल सिंह कुशवाह, जिला शिक्षा अधिकारी बैतूल

बैतूल विधायक ने ली पांच बेसहारा बेटियों की शिक्षा की जिम्मेदारी

माता-पिता की हत्या होने से अनाथ हो गई तीन बेटियाँ, बीमारी से दो बेटियों के सिर से उठ गया पिता का साया

बैतूल। सामाजिक सरोकार और संवेदनशीलता की मिसाल पेश करते हुए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने पांच बेसहारा बेटियों की शिक्षा की जिम्मेदारी लेकर उन्हें उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाई है। बैतूल विधानसभा के सेलगांव ग्राम में मामूली विवाद के चलते संतोष उइके एवं उनकी पत्नी चंपा उइके की हत्या कर दी थी। जिससे उनकी तीन बेटियाँ अनाथ हो गई थी। इधर टेमनी ग्राम में पंजाबराव लोखंडे का बीमारी से निधन होनें के चलते उनकी दोनों बेटियां बेसहारा हो गई थी। परिवार की आर्थिक स्थिती ठीक नहीं होनें के कारण बैतूल विधायक नें पांचो बेसहारा अनाथ बेटियों के भविष्य की चिंता करते हुए उनके आगे की शिक्षा की जिम्मेदारी ली। गुरुवार को ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें सेलगांव एवं टेमनी में पीडितों के निवास पर पहुचकर दिवंगतों को श्रद्धांजलि देकर परिजनों को सांत्वना दी एवं दोनों परिवार की पांचों बेटियों की आगे की पढ़ाई की जिम्मेदारी लेकर परिजनों को आश्वस्त किया कि बेटियों की पढ़ाई पर खर्च होनें वाली राशि उनके द्वारा वहन की जायेगी। विधायक की संवदेनशीलता से

दिवंगतों के परिजन सहित ग्रामीण भावुक हो गये।

चाचा के साथ सारणी में रहकर पढ़ाई करेगी तीन बेटियां- उल्लेखनीय है कि सेलगांव ग्राम में विवाद के चलते संतोष उइके एवं उनकी पत्नी चंपा उइके की हत्या कर दी गई थी। गुरुवार को बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें पीडितों के निवास पर पहुंचकर घटना में घायल परिजनों के स्वास्थ की जानकारी ली। पीडितो नें बताया कि संतोष एवं चंपा की हत्या हो जाने से पूरा परिवार दहशत में है तथा उनकी तीन मासूम बेटियाँ अनाथ हो गई है। बेटियों के चाचा सुभाष उइके नें बताया कि दहशत के कारण वह बेटियों को अपने साथ सारणी ले जायेगें। पीड़ितो नें बताया कि परिवार में कमाने वाले संतोष की हत्या होनें से आर्थिक सकंट की स्थिती है एसे में बच्चियों को पढ़ाना भी मुश्किल है। बैतूल विधायक नें परिजनों को आश्वस्त किया कि वे तीनों बेटियों की आगे की पढ़ाई की जिम्मेदारी उठायेगें। उन्होनें बच्चियों के चाचा सुभाष उइके से कहा कि तीन बेटियों का एडमीशन सारणी के जिस भी स्कूल में करवाओगें आगे की पढ़ाई के लिए स्कूल की फीस का भुगतान उनके द्वारा किया जायेगा। बैतूल विधायक नें तीनों बेटियों प्रार्थना,याचिका और यशस्वी से कहा कि बगैर किसी भय, चिंता के मेहनत से पढ़ाई करें पढ़ाई पर खर्च की जिम्मेदारी मेरी रहेगी। उन्होंने दिवंगत दम्पत्ति की तेरहवीं-श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजन के लिए परिजनों को आर्थिक सहायता भी दी।

बकाया फीस भी करेगें जमा- टेमनी ग्राम में पार्टी कार्यकर्ता पंजाबराव लोखण्डे का बीमारी से निधन होनें पर बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें गुरुवार को उनके निवास पर पहुचकर शोक व्यक्त कर परिजनों को सांत्वना दी। परिजनों एवं ग्रामीणों द्वारा पंजाबराव के निधन के बाद उनकी दोनों बेटियों नैनसी और प्रियांसी की पढ़ाई को लेकर बैतूल विधायक के समक्ष चिंता जाहिर की। परिजनों नें बताया कि बेटियों की स्कूल की फीस भी जमा नहीं कर पाये है। जिससे आगे की पढ़ाई करवाना मुश्किल है। बैतूल विधायक ने स्कूल संचालक से बकाया फीस के संबंध में चर्चा की, स्कूल संचालक नें आधी फीस माफ करनें का आश्वासन दिया। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें दोनों बेटियों की बकाया फीस जमा करनें के साथ ही उनकी आगे की पढ़ाई की जिम्मेदारी लेते हुए दिवंगत के परिजनों को आश्वस्त किया कि उनके द्वारा हर संभव मदद की जायेगी। उन्होनें परिजनों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की। इस दौरान जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे,मंडल अध्यक्ष नितिन बारस्कर,राजू महस्की, अलकेश महस्की,कमल मालवीय,जुबेर पटेल, मनीष डोंगरे, बुधराव कुंभारे,अनिल सिंह,रामराव पोटफोडे, सुभाष उइके सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

क्यों कुपोषित रह जाती हैं स्लम बस्तियों की महिलाएं?

मुद्दा
सितारा बानो

इस वर्ष के शुरुआत में भारत की सबसे बड़ी बैंक एसबीआई ने नवीनतम घरेलू उपभोग सर्वेक्षण के आधार पर एक रिपोर्ट जारी की. जिसमें यह बताया गया है कि देश के शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में पहले की तुलना में गरीबी में कमी आई है. रिपोर्ट के अनुसार देश के ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ष 2011-12 में गरीबी 25.7 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में मात्र 7.2 प्रतिशत रह गई है. इसी अवधि के दौरान शहरी गरीबी में भी कमी दर्ज की गई है, जो 13.7 प्रतिशत की तुलना में घटकर 4.6 प्रतिशत हो गई. इस रिपोर्ट से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि देश के शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ होगा. इसका लाभ उनके बच्चों और महिलाओं को हो रहा होगा जिन्हें कम आमदनी के कारण पौष्टिक भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता है और वह कुपोषण का शिकार हो जाते हैं. लेकिन वास्तविकता इससे कुछ दूर है. अभी भी देश के कई ऐसे शहरी इलाके हैं, जहां रहने वाले गरीब परिवार की महिलाएं और बच्चे कुपोषण का शिकार हैं.

राजस्थान की राजधानी जयपुर स्थित कच्ची (स्लम) बस्ती 'रावण की मंडी' इसका उदाहरण है. सचिवालय से करीब 12 किमी की दूरी पर स्थित इस बस्ती में 40 से 50 झुग्गियां आबाद हैं. जिनमें लगभग 300 लोग रहते हैं. इस बस्ती में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के परिवार निवास करते हैं. जिनमें जोगी, कालबेलिया और मिरासी समुदाय प्रमुख रूप से शामिल है. प्रति वर्ष विजयदशमी के अवसर पर रावण दहन के लिए यहां रावण, मेघनाद और कुंभकरण के पुतले तैयार किए जाते हैं. जिसे खरीदने के लिए जयपुर के बाहर से भी लोग आते हैं. इसी कारण इस बस्ती को रावण की मंडी के रूप में पहचान मिली है. विजयदशमी के अलावा साल के अन्य दिनों में यहां के निवासी आजीविका के लिए रद्दी बेचने, बांस से बनाये गए सामान अथवा दिहाड़ी मज़दूरी का काम करते हैं. शहर में आबाद होने के बावजूद इस बस्ती में मूलभूत सुविधाओं का अभाव देखने को मिलता है. इनमें स्वास्थ्य एक बहुत बड़ा मुद्दा है. यहां महिलाओं और बच्चों में स्वास्थ्य और पोषण की कमी सबसे अधिक देखने को मिलती है. यहां अधिकतर महिलाएं विशेषकर गर्भवती महिलाएं और नवजात बच्चे कुपोषण का शिकार हैं.

छह माह की गर्भवती 27 वर्षीय शारदा की पीली आंखें, सफेद पड़ चुके जीभ और कमजोर शरीर उसकी स्थिति को बयां करते हैं. वह बताती है कि उसके पति दैनिक मजदूर हैं. आमदनी इतनी नहीं है कि पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो पाए. वहीं निवास प्रमाण पत्र और अन्य आवश्यक दस्तावेज़ की कमी के कारण अस्पताल में उसके लिए जांच की कोई व्यवस्था नहीं है. वह बताती है कि अस्पताल वाले मुझसे आईडी प्रूफ मांगते हैं. जो उसके पास नहीं है. ऐसे में वह किसी भी प्रकार की जांच किए बिना उसे लौटा देते हैं. शारदा कहती है कि 'अस्पताल में तो हमारी कोई जांच नहीं की जाती हैं, वहीं कभी कभी बस्ती में एएनएम आती भी हैं तो वह हमें देखे बिना केवल कागजी खानापूर्ति करके चली जाती हैं.' दरअसल इस कच्ची बस्ती में किसी का आईडी प्रूफ नहीं होना सबसे बड़ा मसला है. हालांकि कई ऐसे परिवार हैं जो यहां 20 से अधिक वर्षों से रह रहे हैं. लेकिन आवश्यक दस्तावेज़ की कमी के कारण आज तक किसी का भी प्रमाण पत्र नहीं बना है. इसके कारण महिलाओं की डिलीवरी भी घर में होती है, जिससे बच्चे का जन्म

प्रमाण पत्र भी नहीं बन पाता है. इस तरह नई पीढ़ी में भी किसी का प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं है. जिससे इस बस्ती की महिलाएं और बच्चे सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं.

बस्ती की 38 वर्षीय लाली देवी कालबेलिया समुदाय की है. इस समुदाय को घुमंतू माना जाता है. जो अधिकतर कुछ माह के लिए अपना अस्थाई ठिकाना बनाता है. हालांकि इस बस्ती के ज्यादातर कालबेलिया पिछले कई वर्षों से यहां स्थाई रूप से आबाद हो चुके हैं. लाली के पति और उनका परिवार भी पिछले कई सालों से यही रहता आ रहा है. लाली बताती है कि इस समय वह आठ माह की गर्भवती है. अभी उसके पांच बच्चे हैं. 2 वर्ष पूर्व पति की मृत्यु के बाद दूसरी शादी की है. लाली के पूर्व पति का अस्थाई ठिकाना होने के कारण आज तक उसका कोई दस्तावेज़ या जच्चा-बच्चा कार्ड नहीं बना है. जिससे न केवल उसका बल्कि उसके किसी भी बच्चे का आज तक टीकाकरण भी नहीं हुआ है. गर्भावस्था में खानपान की कमी के कारण लाली शारीरिक रूप से काफी कमजोर हो चुकी है. उसका पूरा शरीर पीला पड़ चुका है. जिसमें खून की कमी को दर्शाता है. वह बताती है कि आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उसे कभी पौष्टिक भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता है. वहीं आवास प्रमाण पत्र नहीं होने की वजह से उसे अस्पताल से आयरन की गोलियां या अन्य कोई लाभ नहीं मिल पाता है. लाली के अनुसार बस्ती में प्रसव कराने आने वाली दाई प्रशिक्षित है या नहीं, यह कोई नहीं जानता है. लेकिन वह प्रसव कराने के ढाई से पांच हजार तक का चार्ज करती है. जो आर्थिक रूप से कमजोर इस बस्ती वालों के लिए बहुत अधिक है.

वहीं बस्ती की एक अन्य महिला गुड्डी देवी बताती हैं कि कुपोषण और बीमारी की वजह से उनके नवजात बच्चे की जन्म के 15 दिन के अंदर मौत हो चुकी है. गर्भवस्था में वह स्वयं काफी कुपोषित थी, जिसका असर उनके बच्चे पर पड़ा और वह जन्म के बाद से ही काफी कमजोर था. लेकिन आधार कार्ड या अन्य कोई दस्तावेज़ नहीं होने के कारण वह सरकारी अस्पताल में बच्चे का इलाज नहीं करा सकी, वहीं आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वह निजी अस्पताल में नहीं जा सकती थी. गुड्डी बताती हैं कि इस बस्ती की सभी गर्भवती महिलाएं कुपोषण से ग्रसित हैं. सरकार के अलावा कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं भी समय समय पर यहां आती रहती हैं, लेकिन कोई भी कुपोषण से लड़ने के लिए इन महिलाओं की मदद नहीं करता है.

बहरहाल, कुपोषण की शिकार महिलाओं के स्वास्थ्य का मुद्दा बहुत अहम है. ऐसे में सरकार को इससे जुड़ी योजनाओं को इस प्रकार से क्रियान्वित करने की जरूरत है जिससे केवल दस्तावेज़ की कमी के कारण कोई महिला पोषण और योजनाओं के अन्य लाभ से वंचित न रह जाए. वहीं समाज और इन क्षेत्रों में काम करने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं को भी गंभीरता से अपनी जिम्मेदारी निभाने की आवश्यकता है ताकि सभी के संयुक्त प्रयास धरातल पर नजर आएं और इस बस्ती जैसी शहरी गरीबी में जीवन यापन कर रही अन्य स्लम बस्तियों की महिलाएं भी कुपोषण मुक्त जीवन गुजार सकें. (चरखा फीचर)

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर 20 जुलाई को जिले की मनावर विधानसभा क्षेत्र में प्रवास पर रहेंगी

विकास कार्यो का भूमि पूजन व आंगनवाड़ी निरीक्षण करेंगी

धार। केंद्रीय राज्यमंत्री महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार एवं धार- महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर 20 जुलाई शनिवार को जिले की मनावर विधानसभा क्षेत्र में प्रवास रहकर

विकास कार्यो का भूमि पूजन व आंगनवाड़ी निरीक्षण करेंगी।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर तय कार्यक्रम अनुसार 20 जुलाई को सुबह धामनोद से प्रस्थान कर सुबह 9:30 बजे मनावर विधानसभा क्षेत्र ग्राम कालीबावड़ी में जन आभार रैली में शामिल होगी। वहा से उमरबन भानपुरा रालामंडल लुन्हेरा बुजुर्ग टवलई झिर्वी होते हुए दोपहर 1 बजे अमलाठा राजपुरा आंगनवाड़ी केंद्र का निरीक्षण करेंगी। ग्राम बाकानेर में जन आभार रैली के रूप में अजंदीमान भरडपुर से दोपहर 3 बजे मनावर नगर में रैली निकलेंगी जिसका जगह जगह मंच लगाकर भाजपा कार्यकर्ता पुष्प वर्षा कर स्वागत करेंगे। मनावर से ग्राम बारूद सिंघाना होते हुए शाम 5 बजे ग्राम मांडवी में विभिन विकास कार्यो का भूमि पूजन करेंगे। ग्राम जाजम खेड़ी बालीपुर श्री अम्बिका आश्रम गुरूजी दर्शन कर रात्रि 8 बजे धामनोद के लिए प्रस्थान करेंगी।

तला मोहल्ला क्षेत्र के घरों में गंदे पानी निकासी की मांग

सुबह सवेरे सोहागपुर। रेवा बनखेड़ी रोड पर स्थित पुण्य जमनी सरोवर के निकट सड़क मार्ग का निर्माण किया जा रहा है। इस रोड के निकट मातापुरा एवं गांधी वार्ड में सम्माहित तला मोहल्ला क्षेत्र के रहवासी लम्बे अरसे से घरों से निकलने वाले गंदे पानी एवं सड़क के आसपास कीचड़ से लगातार परेशान रहते हैं। जिससे क्षेत्र रहवासियों को हमेशा बीमारियों का अंदेशा बना रहता है। इसी संदर्भ को लेकर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह, पार्षद जमील

खान, पार्षद भास्कर मांझी,नीरज चौधरी,आकाश चौरसिया सहित कई क्षेत्रवासियों ने अनुविभागीय अधिकारी बृजेंद्र रावत को ज्ञापन सौंपा। इस संबंध में पार्षद जमील खान एवं पार्षद भास्कर मांझी ने इस प्रतिनिधि को बताया कि तला मोहल्ला के निवासी काफी समय से सड़क के आसपास कीचड़ एवं गंदे पानी से परेशान रहते हैं।आज ज्ञापन के द्वारा हमने नाली निर्माण की मांग की है। इसी संदर्भ में हमने कई बार लिखित आवेदन पत्र प्रदान करके नाली निर्माण की मांग की है। लेकिन कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाए गए हैं।हम शासन से तला मोहल्ला के क्षेत्रवासियों के लिए शीघ्र नाली निर्माण की मांग करते हैं।

भाजपा जिला कार्यालय में भाजपा मंडल कार्यसमिति की बैठक संपन्न हुई

प्रदेश के इस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का झूठ नहीं चला : विनोद शर्मा

धार। भाजपा जिला कार्यालय में गुरुवार को भाजपा के तीन मंडलों की कार्यसमिति बैठक आयोजित की गई। आगामी 4 अगस्त 2024 तक के कार्यक्रमों की तैयारियों पर चर्चा की गई।

मंडल कार्यसमिति में मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य एवं पूर्व जिला अध्यक्ष विनोद शर्मा और किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोदिया ने संबोधित किया ।

मंडल कार्यसमिति में अपेक्षित कार्यकर्ताओं का पंजीयन कर मां भारती व पार्टी के पितृपुरुष डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी, पं दीनदयाल उपाध्याय का स्मरण कर प्रज्वलन कर बैठक का शुभारंभ हुआ। मंडल कार्य समिति की प्रस्तावना, संगठनात्मक वृत्त और स्वागत भाषण मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर ने दिया।

बैठक में भाजपा नेता पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर डॉ. शरद विजयवर्गीय भाजपा जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़ मंडल अध्यक्ष क्रमशः विपिन राठौर नितेश अग्रवाल और तिरला मंडल अध्यक्ष अमित पाटीदार, जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा मंडल प्रभारी रवि पाठक और भगवान खंडेलवाल, नरेश राजपुरोहित ,श्याम नायक ,ज्ञानेंद्र त्रिपाठी मोर्चा जिला अध्यक्ष पूनमचंद फकीरा और कुसुम सोलंकी मंचासीन रहे।

भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष मुख्य वक्ता विनोद शर्मा ने मंडल कार्यसमिति बैठक को संबोधित करते हुए

कहा कि इस लोकसभा चुनाव में प्रदेश में कांग्रेस का झूठा खटाखट खटाखट वाला नहीं चला कांग्रेस हमेशा चुनाव के वक्त झूठ फैलती है इस बार प्रदेश में 29 लोकसभा सीट में से 29 पर विजय प्राप्त कर भाजपा कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस को करारा जवाब दिया। भाजपा को हर बूथ पर जीत दिलाना भाजपा कार्यकर्ताओं का पहला लक्ष्य होना चाहिए । पितृ पुरुष कुशाभाऊ ठाकरे जी के जिले को हम सब कार्यकर्ता मिलकर संगठन को और अधिक मजबूत करेंगे।

दिलीप पाटोदिया ने कहा कि इस लोकसभा चुनाव में विरोधी शक्ति एकजुट होने के बावजूद नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को नहीं रोक पाई क्योंकि हम राष्ट्र सर्वोपरि विचारधारा से जुड़े हुए हैं। 6 अप्रैल 1980 से पंच निष्ठा को लेकर हम राजनीतिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

मंडल प्रभारी भगवान खंडेलवाल ने कहा- 20 जुलाई तक शक्ति केंद्र सम्मेलन आयोजित किया जाना है। जिसमें बूथ नेतृत्व सम्मान दिया जाना है। इसमें ऐसे बूथ अध्यक्ष, महामंत्री, बीएलए, शक्ति केंद्र की टोली, यहां निवासरत जनप्रतिनिधी, सरपंच पार्षद या इससे ऊपर के लोगों का सम्मान करना है। 21 जुलाई को गुरू पूर्णिमा पर अपने-अपने क्षेत्र के मठ, मंदिर, संत-महात्मा, आश्रम के कार्यक्रमों में उपस्थित रहना है। उसी दिन कारगिल के विजय सैनिकों का सम्मान करना है। प्रतिमा स्थलों पर स्मारकों पर पुष्पांजलि के कार्यक्रम कराना है। 28 जुलाई को सामूहिक रूप से प्रत्येक बूथों पर मन की बात का प्रसारण करवाना है जिसमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को शामिल करने का प्रयास करना है। 23 जुलाई से 4 अगस्त तक एक पेड़ मां के नाम लगाना है। बैठक में सभी बूथों से आए बूथ प्रमुखो और कार्यकर्ताओं पर फूलों की वर्षा करके उनका सम्मान किया ।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि बैठक में प्रदेश का राजनैतिक प्रस्ताव का वाचन मंडल महामंत्री सन्नी होड़ा ने किया व प्रस्ताव का समर्थन डॉ गंगाराम पाटीदार ने किया और सदन में उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं ने ओम की ध्वनि के साथ राजनैतिक प्रस्ताव का समर्थन किया। शोक प्रस्ताव पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिला महामंत्री अनिल गहलोत ने रखा। शोक प्रस्ताव के माध्यम से मंडल में निवासरत विगत दिनों हुए दिवंगत भाजपा नेताओं को 2 मिनट का मोन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ, संगठन गीत भाजयुमो जिला महामंत्री अंकित भावसार, कार्यक्रम का संचालन मंडल महामंत्री राजेश डाबी और आभार मंडल अध्यक्ष नितेश अग्रवाल ने माना।

इलाके की समस्याएं लेकर बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों का नपा पर धावा

नगर पालिका अध्यक्ष बोले तीन दिन के भीतर होगी कार्यवाही

आमला। गुरुवार को शहर के अलग-अलग इलाके के लोग अपनी समस्याएं लेकर नगर पालिका पहुंचे, संयोगवश मौके पर नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरे नगर पालिका अधिकारी वीरेंद्र तिवारी और इलाके के कई पार्षदगण भी उपस्थित थे।

दरअसल शहर के कई इलाके इन दोनों वर्षाकाल में जलभराव और जलजमाव जैसी समस्या से जूझ रहे हैं, और इन हालातो के चलते हर साल लोगों को बारिश में आर्थिक एवं मानसिक परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है, ऐसे में नगर पालिका द्वारा ध्यान नहीं दिए जाने से परेशान होकर बड़ी संख्या में महिलाएं व्यापारी और बच्चे भी नगर पालिका पहुंचे और मुख्य नगर पालिका अधिकारी को ज्ञापन देकर शीघ्र कार्रवाई की मांग की है। मामले की नजाकत को देखते हुए नगर पालिका अध्यक्ष श्री गाडरे ने फौरन सभी संबंधित विभागों से चर्चा कर तीन दिन के भीतर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं, जिस पर लोगों ने नगर पालिका अध्यक्ष का आभार माना है, इस मौके पर मनोहर सूर्यवंशी, गज्जू टिकारे,अरुण मथुरिया, मोहम्मद सलीम, आलोक मित्रा, मोनू सिसोदिया, सुरेश यादव, सविता यादव, ममता यादव, चंदा यादव, ताराबाई, अरुण महतकर, लीलावती, संगीता प्रजापति सहित कई लोगों उपस्थित थे।

ज्ञापन में नाली सड़क सहित अन्य मामले भी शामिल- इस मौके पर नगर पालिका पहुंचे लोगों ने नगर पालिका अधिकारी के नाम में ज्ञापन दिया है जिसमें शहर के बस स्टैंड इलाके की दुकानों मकानो में घुस रहे बारिश के पानी, दुर्घटना का सबब बन रहे सड़क किनारे लगे कुछ पुराने पेड़, संकीर्ण पुलिया और नालियों के बारे में गंभीरता से कार्यवाही की मांग की गई है, ज्ञापन में बताया गया है कि शहर के मेंन रोड के कई इलाके, बस स्टैंड, शनिवार बाजार में लोग समस्या से जूझ रहे हैं, लोगों की मांग पर नगर पालिका अध्यक्ष ने इस मामले पर अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देशित किया है, इस मौके पर लोगों ने उम्मीद जताई है कि मामले की गंभीरता को देखते हुए नगर पालिका आश्वासन की बजाय कार्यवाही जरूर करेगी।

पार्षद से अभद्रता पर कर्मचारियों को नोटिस- इधर शहर के वार्ड क्रमांक 16 के पार्षद रोहित हरोड़े से एक सफाई कर्मचारी द्वारा अभद्र व्यवहार करने और शिकायत पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी और अध्यक्ष के निर्देश पर कर्मचारियों को नोटिस जारी किया गया है जैसा कि बताया गया है की सफाई कर्मचारी विनियमित कर्मचारी है, जनप्रतिनिधि से अभद्र व्यवहार के मामले में उसे हटाया भी जा सकता है।

सोहागपुर में बनते हैं उत्कृष्ट ताज़िए, रखे जाते हैं दो दिन

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। हजरत इमाम हुसैन साहब का शहीदी पर्व मुहर्रम का त्यौहार ताजियों के विसर्जन के साथ शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। इस साल करीबन 35 ताजियों को ताजियेदारों ने उत्कृष्ट कलाकारी से संजोया था। इसमें किन्नरो ने एक बुर्राक रखी थी,किलापुरा से पंचायती ताजिया, मातापुरा से दो पीढ़ियों से हिन्दू समाज के ताजिया रखने प्रहलाद किरार ताजिया इसके अलावा कई ताजिया पुलिस थाने के पीछे रखे गए थे। यहां सभी समुदायों के नागरिकों ने लोभान छोड़ी। इसके पूर्व किलापुरा वार्ड, गांधी वार्ड, अंबेडकर वार्ड एवं अन्य स्थानों से ताजियों का जुलूस पुराने थाने के पीछे पहुंचा था।यहां पर रात भर ताजिए आवाम की जियारत (दर्शनार्थ) के लिए रखे गए। इस अवसर पर अखाड़ा प्रर्दशन एवं धार्मिक आयोजन भी संपन्न हुए।

निकाली सवारी

मुहर्रम के अवसर पर नगर के विभिन्न स्थानों से करीबन 8, सवारियां निकली गई। जिसमें किलापुरा से बड़ी सवारी, कय्यूम भाई डिस्क वाले, अहसान ठेकेदार, इकबाल भाई बस वाले आदि ने सवारियां निकाली। इसके पूर्व शेख अनवर के यहां से अनुमान कालोनी ने सवारी निकली थी।सवारी छोटी मस्जिद, कन्या शाला, बिहारी चौक से होकर पुनः उनके निवास पर पहुंची थी।

प्रदेश से अनूठा,दो रखते हैं ताजिया

जहां प्रदेश में हज़रत इमाम हुसैन की याद में केवल एक दिन ताज़िए रखे जाते हैं। लेकिन सोहागपुर एक ऐसा अनूठा नगर है जहां दो दूसरे दिन ताजियों का विर्सजन होता है। इसके इतिहास पर नजर दौड़ाएं तो देश की आजादी के पूर्व गांधी वार्ड के निवासी फैयाज भाई एवं सुन्नी भाई के वालिदो ने ऐसे उत्कृष्ट ताज़िए का निर्माण किया था।कि अंग्रेजों के कारिंदे प्रसन्न हो गए। बताया जाता है उनको अंग्रेजों ने जमीन दी थी। तभी सोहागपुर में दो दिन ताज़िए रखने की परम्परा है।

हुआ विर्सजन

बुधवार को पुलिस थाने के पीछे रखे गए ताज़िए। आज सुबह रघुवंशीपुरा रवाना हुए। बाद में रेलवे पुल के पास करबला में ताजियों का विसर्जन किया गया। मुस्लिम त्यौहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान ने नगर पंचायत परिषद, पुलिस प्रशासन का सहयोग करने पर आभार व्यक्त किया है।

सांसद एवं विधायक ने किया राजस्व महाअभियान का शुभारंभ

नरसिंहपुर। राजस्व महा अभियान 2.0 का शुभारंभ सांसद होशंगाबाद चौधरी दर्शन सिंह, विधायक तेंदूखेड़ा श्री विश्वनाथ सिंह, नगर परिषद अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार शर्मा, श्री अभिलाष मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने नगर परिषद कार्यालय के सभागार में किया। इसके उपरांत किसानों के साथ अभियान को सफल बनाने पर चर्चा की। इस दौरान अनुविभागीय राजस्व अधिकारी, तहसीलदार, आरआई, पटवारी सहित राजस्व अमला मौजूद था। इस दौरान सांसद श्री सिंह ने जानकारी देते हुए

बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा राजस्व महा अभियान 2.0 प्रदेश में चलाया जा रहा है। इसमें भू-स्वामियों के हित में त्वरित और आसान सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए यह अभियान 18 जुलाई से 31 अगस्त तक जारी रहेगा। अभियान के अंतर्गत राजस्व न्यायालय के निर्लंबित प्रकरणों का त्वरित निराकरण, भू- अभिलेख का दुरूस्तिकरण और अभिलेख की शुद्धिकरण जैसे कार्य किए जाएंगे। किसान सम्मान निधि के लिए किसानों के नाम जोड़ने के साथ ही ई-पटवारी बस्ता की व्यवस्था आरंभ की जा रही है। इससे शुचिता के साथ राजस्व प्रकरणों के त्वरित निराकरण में मदद मिलेगी। इसके पश्चात एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत नगर परिषद कार्यालय के परिसर में पौधारोपण किया गया।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

केदारनाथ : सोना चोरी नहीं तो जांच से क्यों डरना?

यह कोई राजनीतिक आरोप नहीं है। न ही किसी राजनेता ने सरकार में बैठे किसी सत्ताधीश राजनेता पर लगाया है। इसे आरोप भी नहीं कहना चाहिए। एक मांग है जो ज्योतिर्लिंग केदारनाथ मंदिर के सोने से जुड़ी हुई है। इस मांग को नए सिरे आवाज देने वाले शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद हैं। केदारनाथ मंदिर के सोने को लेकर पिछले एक साल से वहां पंडा-पुरोहित लगातार आंदोलन कर रहे हैं। कुछ साल पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी केदारनाथ मंदिर की गुफा में तपस्या करते दिखाई दिए थे। अब जब वहां के सोने को लेकर विवाद उठ रहा है तो उनकी चुप्पी लोगों को हैरान कर रही है। उत्तराखंड सरकार ने मामले की जांच के लिए जो कमेटी बनाई थी, वह लोगों को स्वीकार नहीं है। हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज से जांच की मांग उठ रही है। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने इसे अपनी आवाज देकर मामले की ओर पूरे देश का ध्यान एक बार फिर खींचा है। पिछले साल जून में केदारनाथ धाम के गर्भगृह से एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। वीडियो में दावा किया गया था था कि केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में लगाया गया एक अरब 15 करोड़ रुपए का सोना पीतल में तब्दील हो गया। वायरल वीडियो चारधाम महापंचायत उपाध्यक्ष और केदारनाथ के वरिष्ठ तीर्थ पुरोहित आचार्य संतोष त्रिवेदी का बताया गया। हालांकि वायरल वीडियो के आरोपों का खुद बदरी-केदार मंदिर समिति ने खंडन किया था। उन्होंने केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में लगे सोने की कीमत करीब 14 करोड़ रुपए बताई थी। विवाद बढ़ने पर पुष्कर धामी सरकार ने इस मामले की जांच कराने का फैसला लिया था। सरकार ने संस्कृति एवं धार्मिक मामलों के सचिव हरि चंद्र सेमवाल और गढ़वाल कमिश्नर की अध्यक्षता में एक जांच टीम गठित करने का कहा था। चौंकाने वाली बात है कि उस आदेश पर आज तक अमल नहीं हो पाया। जांच शुरू न होने पर पिछले साल धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने तब यहां तक कहा था कि कमेटी में विशेषज्ञों के साथ-साथ स्वर्णकार भी शामिल किए जाएंगे। अगर जांच में कुछ भी घपला निकलकर सामने आया, तो दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। हालांकि अब फिर से सवाल यही खड़ा हो रहा है कि आखिर अब तक इस संवेदनशील मुद्दे पर जांच शुरू क्यों नहीं हुई है? इस मामले पर शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा कि इतने लंबे समय के बाद भी सरकार ने मामले की जांच नहीं कराई है, ये केदारनाथ धाम और आस्था के लिए सही नहीं है। इतने दिनों के बाद भी ये मसला विवादों में है। कोई भी कुछ भी बोलने और करने के लिए तैयार नहीं है? शंकराचार्य ने कहा कि ये सवाल उठने के बाद भी सरकार और मंदिर समिति खामोश रहती है तो यही समझा जाएगा कि भगवान केदारनाथ के साथ धोखा हुआ है। लोगों को यही लगता है कि मंदिर से शंकराचार्य जुड़े हैं और ये सब उनकी देखरेख में हुआ है। मतलब उनकी छवि के ऊपर भी भक्त सवाल कर रहे हैं। इसलिए सरकार जल्द इस मामले में जांच करे और जो सच है उसे बताएं। यदि कोई दोषी निकले तो उसे सजा मिले।

230 किलो सोना 23 किलो कैसे हुआ?

वर्ष 2022 के सितंबर महीने में केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह में सोने की परत चढ़ाने का काम हुआ था। मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने बताया था कि मुंबई के एक व्यापारी ने 230 किलो सोना मंदिर समिति को दान किया है। इसके बाद गर्भगृह की दीवारों और छत पर सोने की परत चढ़ाई जा रही है। सोने की परत चढ़ाने का काम

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के दो अधिकारियों की देखरेख में पूरा हुआ था, जिसमें लगभग 19 कारीगर लगाए गए थे। मंदिर समिति ने यह भी कहा था कि सोना चढ़ाने से पहले रुड़की आईआईटी सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च के साथ-साथ एएसआई के सदस्यों ने भी केदारनाथ पहुंचकर पूरी रूपरेखा समझी थी। विवाद पर बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) ने आधिकारिक तौर पर कहा कि केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह की दीवारों एवं जलेरी को स्वर्ण जड़ित कराए जाने का काम पिछले वर्ष एक दानी दाता के सहयोग से किया गया। मंदिर समिति ने श्री केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह को स्वर्णजड़ित करने पर सोशल मीडिया में फैलाये जा रहे भ्रम को षड्यंत्र का हिस्सा बताया। वहीं पुर्ननिर्माण कार्यो की निरीक्षण को आए विशेष कार्याधिकारी भास्कर खुल्बे व पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने भी सोने की परत लगाने वाले कारीगरों से जानकारी ली तथा कार्य पर संतोष जताया। बीकेटीसी ने स्पष्ट किया है कि बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति अधिनियम-1939 में निर्धारित प्रावधानों के अनुरूप ही दानी दाता से दान स्वीकारा गया है और श्री केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह को स्वर्ण मंडित करने के लिए प्रदेश शासन से अनुमति ली गई। बीकेटीसी द्वारा केदारनाथ मन्दिर के गर्भगृह की दीवारों पर सोने की परत चढ़ाने की अनुमति दानी दाता की भावना के अनुरूप दी गई। दानी दाता द्वारा अपने स्तर से ज्वैलर्स से तांबे की प्लेटें तैयार करवाई गई और फिर उन पर सोने की परत चढ़ाई गई। दानी दाता ने अपने ज्वैलर्स के माध्यम से ही इन प्लेटों को मंदिर में स्थापित कराया। सोना खरीदने से लेकर दीवारों पर जड़ने तक का सम्पूर्ण कार्य दानी द्वारा कराया गया। मंदिर समिति की इसमें कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी। स्वर्ण व तांबे की प्लेटों के आधिकारिक बिल वाउचर बीकेटीसी को कार्य पूर्ण होने के पश्चात दे दिए गए थे।

बीकेटीसी द्वारा नियमानुसार उसे स्टॉक बुक में दर्ज किया गया है। दानस्वरूप किए गए इस कार्य हेतु दानी व्यक्ति अथवा किसी फर्म द्वारा बीकेटीसी के समक्ष किसी प्रकार की शर्त नहीं रखी गई और नहीं दानी दाता ने बीकेटीसी से आयकर अधिनियम की धारा-80 जी का प्रमाण पत्र मांगा। दो साल पहले नीचे वाली सोने की परत का एक्रिलिक ट्रांसपेरेंट सीट का लेमिनेशन किया गया। कार्य शुरू होने से पहले इस खबर ने पूरे देश में सुर्खियां बटोरी थीं कि एक दान दाता ने केदारनाथ मंदिर की दीवारों पर सोने की परत चढ़ाने के लिए 230 किलो सोना दान दिया है। यही 230 किलो सोना 23 किलो बन गया है। बताया जाता है कि कि मंदिर के स्वभू शिवलिंग के चारों तरफ जलेरी पर सोने की परत पर कपाट बंद होने के कारण सीट नहीं लगाई जा सकी थी। जिस कारण प्रतिदिन होने वाली सफाई व लोगों के पूजा के दौरान दान से सोने नुकसान पहुंच रहा था, इसकी सूचना मंदिर समिति के मुख्य कार्याधिकारी व मंदिर समिति के अध्यक्ष को दी गई थी, जिस पर दानदाता को इसकी सूचना दी गई। उनके द्वारा कारीगर भेजे गए, सोने नुकसान पहुंचे सोने की परत का सोने का वर्क चढ़ाया, तथा इसके पश्चात एक्रिलिक ट्रांसपेरेंट सीट लगाई, ताकि भविष्य में सोने को दुबारा नुकसान न पहुंचे। यदि दाना दाता ने ही पूरा कार्य कराया है तो सरकार को सर्वस्वीकार्य जांच में आपत्ति नहीं होना चाहिए। सोना गायब करने का आरोप न तो भाजपा के मुख्यमंत्री पर है और न ही किसी अन्य बड़े नेता पर है। अब जबकि शंकराचार्य इस मामले की जांच की मांग कर रहे हैं तो धर्म की राजनीति करने वाली भाजपा सरकार को इसे स्वीकार भी कर लेना चाहिए। ताकि लोगों को भरोसा बना रहे। अन्यथा इतिहास में यह मामला भी उसी तरह दर्ज हो जाएगा जिस तरह आपातकाल में जयपुर राजघराने के सोने से संजय गांधी का नाम जुड़ता था।

मुखर शंकराचार्य हैं अविमुक्तेश्वरानंद

शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुलाकात अनंत अंबानी के विवाह समारोह में हुई थी। इस समारोह के बाद शंकराचार्य महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के निवास पर गए थे। शंकराचार्य से प्रधानमंत्री की मुलाकात का जो वीडियो सामने आया है उसमें वे अविमुक्तेश्वरानंद को पैर छूकर प्रणाम कर रहे हैं। शंकराचार्य ने आशीर्वाद स्वरूप गले में धारण की हुई रुद्राक्ष की माला प्रधानमंत्री को दी। इससे पहले कई ऐसे मौके आए, जब शंकराचार्य ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की खुलकर आलोचना की है। अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन को अविमुक्तेश्वरानंद ने अनुचित और गलत बताया था। अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा था कि, ये उद्घाटन ही गलत है क्योंकि राम मंदिर अभी पूरा बना ही नहीं है। उन्होंने कहा था कि, आधे-अधूरे मंदिर में भगवान को स्थापित किया जाना न्यायोचित और धर्म सम्मत नहीं है। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी ही नहीं किसी भी पीठ के शंकराचार्य ने रामलला की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लिया था। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ वाराणसी में भगवान पाठक को निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर मैदान में उतारा था। पाठक का नामांकन निरस्त होने के बाद अविमुक्तेश्वरानंद जी धरने पर भी बैठे थे। हैं। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने 4 जून 2022 को ज्ञानवापी परिसर में पूजा का ऐलान किया था। पुलिस प्रशासन की तरफ से रोके जाने के बाद वे 108 घंटे तक अनशन पर रहे। उसके बाद जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के कहने पर उन्होंने अनशन खत्म किया था।

केदारनाथ पर 2013 में हुई थी सियासत

केदारनाथ की त्रासदी को ग्यारह साल हो गए हैं। 2013 की इस त्रासदी के बाद जो सियासत हुई थी,उसमें नरेन्द्र मोदी भी जुड़े हुए थे। बादल फटने की त्रासदी 16 जून को हुई थी। मोदी इसके बाद खुद 21 जून को उत्तराखंड पहुंचे थे। 21 और 22 जून को वो वही रहे और हवाई सर्वेक्षण के जरिये न सिर्फ पूरे इलाके में हुए नुकसान का जायजा लिया, बल्कि केदारनाथ परिसर के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव भी कांग्रेस की तत्कालीन राज्य सरकार के सामने रखा। सियासी कारणों से कांग्रेस ये मंजूर नहीं कर सकती थी, केंद्र और राज्य दोनों जगह उसकी सरकार थी। मोदी ने तब वहां फंसे सैकड़ों यात्रियों को दुर्गम इलाकों से बाहर निकलवाया और विशेष विमान का प्रबंध कर उनके गंतव्य तक पहुंचाया, जिसमें उनके अपने गृह राज्य गुजरात के भी यात्री बड़े पैमाने पर थे। मई 2014 में केंद्र सरकार की बागडोर संभालने के बाद मोदी ने केदारनाथ परिसर और वहां जाने वाले मार्ग के पुनर्निर्माण के कार्य को जबरदस्त प्राथमिकता दी और अगले चार वर्षों के अंदर इस पूरे इलाके की सूरत बदल दी, इस दौरान मोदी लगातार वहां जाते रहे। इस कारण भी सोने से जुड़े विवाद में उनकी चुप्पी हैरान करने वाली है।

शिवराज का वही पुराना अंदाज

शिवराज सिंह चौहान लंबे समय तक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। अब केंद्र में कृषि मंत्री हैं। लेकिन, उनका अंदाज अभी भी मुख्यमंत्री की तरह देखने को मिलता है। शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को रायसेन जिले में विकास के रोडमैप बनाने के लिए अधिकारियों की बैठक ली। अधिकारियों की बैठक लेते हुए उन्होंने कहा कि हमें विकास की दृष्टि से रायसेन जिले को शीर्ष पर पहुंचाना है। केंद्र और प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी और विकास मूलक योजनाओं का जिले में आदर्श तरीके से क्रियान्वयन किया जाए, जिससे कि समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचे। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जमीनी स्तर से काम होगा तो जल्दी बदलाव आएगा। केन्द्रीय मंत्री चौहान ने जिले के विकास के लिए विभागवार आगामी पांच साल का रोडमैप बनाने के निर्देश देते हुए कहा कि विकास का ऐसा मॉडल बनाना है जो कि जमीनी स्तर से शुरू हो। रायसेन जिला शिवराज सिंह चौहान के संसदीय क्षेत्र का हिस्सा है। वे राज्य के मुख्यमंत्री बनने से पहले इसी क्षेत्र से सांसद भी चुने जाते रहे हैं।

दिग्विजय सिंह ईवीएम को लेकर फिर अदालत पहुंचे

लोकसभा के इस चुनाव में मध्यप्रदेश में भले ही कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली लेकिन,उत्तर प्रदेश के नतीजों ने भाजपा को बहुमत से रोक दिया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी 99 सीटें मिलने पर फूले नहीं समा रहे हैं। इंडिया गठबंधन के नेता अखिलेश यादव भी खुश हैं। दुखी हैं तो दिग्विजय सिंह। उन्हें लग रहा है कि वे चुनाव ईवीएम के कारण हार गए। लोकसभा चुनाव में गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए दिग्विजय सिंह ने हाईकोर्ट (जबलपुर) में मंगलवार को याचिका दायर की है। याचिका में उन्होंने कहा कि चुनाव में नियमों का पालन नहीं हुआ। इससे पहले उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इलेक्शन कमिशन पर गड़बड़ी का आरोप लगाया। दिग्विजय सिंह राजगढ़ सीट से कांग्रेस प्रत्याशी थे। उन्हें बीजेपी के रोडमल नागर ने हराया।

दिग्विजय सिंह ने कहा कि यह हमारा हक बनता है जानने का कि हम जिसे वोट दे रहे हैं, वह जहां जाना चाहिए वह गया कि नहीं। उन्होंने कहा कि इलेक्शन फेयर एंड ट्रांसपेरेंट होना चाहिए जो कि नहीं हुआ यही वजह है कि इन सभी बिंदुओं को लेकर हाईकोर्ट में याचिका दायर की जा रही है।

भोपाल में 6 महीने में 54 साइबर अपराधी गिरफ्तार

ऑनलाइन निवेश और इंस्टाग्राम पर सस्ते आईफोन मोबाइल बेचने का देते थे झांसा

भोपाल (नप्र)। साइबर अपराधियों ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म को अपना नया अड्डा बना लिया है। आरोपी लुभावने विज्ञापन देकर कम दाम में आईफोन बेचने और ऑनलाइन निवेश का झांसा देकर लोगों को ठगने का काम कर रहे हैं। इस तरह के 26 केस बीते 6 महीने में दर्ज किए जा चुके हैं। 54 साइबर सालसाजों को भी गिरफ्तार कर पुलिस जेल भेज चुकी है।

ऑनलाइन कारोबार का झांसा देकर महिला को ठगा

निशातपुरा इलाके में रहने वाली पूजा कुमारी (25) को वॉट्सऐप पर कॉल आया कि ऑनलाइन निवेश करती है तो अच्छा कमीशन मिलेगा। जालसाज ने वॉट्सऐप पर लिंक भेजकर उन्हें इंस्टाग्राम के एक ग्रुप में जोड़ लिया। शुरुआत में पूजा से 5-5 हजार रुपए निवेश कराए गए फिर पूजा ने एक मुश्त 1.30 लाख निवेश कर दिए।

निवेश करने के बाद पूजा को कोई कमीशन नहीं मिला। जालसाजों ने रकम लेने के बाद इंस्टाग्राम पेज और फोन बंद कर लिया। पूजा जालसाजों को कुल 2.05 लाख दे चुकी थी। लंबी जांच के बाद साइबर सेल ने निशातपुरा पुलिस को एफआईआर दर्ज कराने के लिए प्रतिवेदन भेजा था। जिसके आधार पर पुलिस ने विगत 17 जून को केस दर्ज कर लिया था। फिलहाल पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है।

सस्ता आईफोन बेचने का झांसा दिया

भोपाल निवासी फरियादी ने साइबर क्राइम को शिकायत दर्ज कराई थी। जिसमें उसने इंस्टाग्राम पर आईफोन का विज्ञापन देखकर एक आईफोन बुक किया था। आवेदिका को वॉट्सऐप नंबर पर पेमेंट का लिंक आया था। जालसाजों ने कस्टम ड्यूटी और रीफंड आदि का झांसा देकर 1 लाख 88 हजार 999 रुपए की ठगी की थी। साइबर पुलिस ने जांच में पाया कि आरोपियों ने इंस्टाग्राम पर कम कीमत पर महंगे मोबाइल बेचने का विज्ञापन देने के लिए इंस्टाग्राम पर इंटरग्रटी मोबाइल नाम का पेज बनाया था।

यहां संपर्क के लिए वॉट्सऐप मोबाइल नंबर दिया जाता था। जो ग्राहक नंबर पर संपर्क करता था उससे आरोपी कम कीमत पर मंहगे मोबाइल देने की डील फाइनल करते थे। इसके बाद वह रजिस्ट्रेशन फीस के नाम पर 5999 रु जमा करा लेते थे। पुलिस ने मामले में विगत 17 जून को पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था।

क्यूआर कोड भेजकर भी की जाती है ठगी

साइबर अपराधी अब क्विक रिस्पॉन्स (क्यूआर) कोड भेजकर लोगों को ठग रहे हैं। जालसाज सोशल मीडिया के इंस्टाग्राम, वॉट्सऐप जैसे ऐप्स पर क्यूआर कोड भेजकर रकम वॉलेट अकाउंट में प्राप्त कर लेते हैं। फिर दूसरे खाते में ट्रांसफर कर एटीएम से निकाल लेते हैं। इससे पैसों की ऑनलाइन ट्रेल टूट जाती है। क्यूआर कोड में रकम प्राप्त करने वाले का सिर्फ यूपीआई ही आता है। बाकी अन्य जानकारी नहीं मिल पाती है।

मुख्यमंत्री कल जबलपुर में आरआईसी का करेंगे शुभारंभ

रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव में 3500 से अधिक निवेशक होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में संतुलित और समतापूर्ण विकास की यात्रा आगे बढ़ाते हुए, राज्य सरकार शनिवार 20 जुलाई 2024 को सुबह 09:00 बजे से संस्कारधानी-जबलपुर में 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस सांस्कृतिक और सूचना केंद्र' में अपना दूसरा रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव (क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन) आयोजित कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन का शुभारंभ करेंगे। इस सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्रीय क्षमता का दोहन कर औद्योगिक विकास में असमानताओं को दूर करना है। जबलपुर क्षेत्र की औद्योगिक क्षमताओं और अवसरों से निवेशकों को रू-ब-रू करवाकर क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना है। नवाचारी सम्मेलन का उद्देश्य प्रमुख बाजारों से निवेशकों को एक साथ लाकर, सार्थक चर्चा करके सहयोग को बढ़ावा देना है। सम्मेलन में प्रमुख उद्योगपतियों, विभिन्न उद्योग संघों के प्रतिनिधियों, नौकरशाहों और प्रमुख विदेशी प्रतिनिधियों सहित 3500 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे। आरआईसी में वैधनाथ समूह, आईटीसी, वोल्वो आयशर, बेस्ट कॉर्प, एसआरएफ और दावत समूह जैसे प्रमुख औद्योगिक समूह भाग लेंगे। आरआईसी में ताईवान, मलेशिया, यूके, फिजी, जापान और इंडोनेशिया का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख विदेशी प्रतिनिधि भी इसमें शामिल होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वर्चुअली 60 से अधिक इकाईयों का उद्घाटन करेंगे और कार्यक्रम के दौरान उद्योगपतियों के साथ आमने-सामने चर्चा करेंगे। विशिष्ट अतिथि एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप और पीडब्ल्यूडी मंत्री श्री राकेश सिंह सहित अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे।

- **संतुलित एवं समतापूर्ण विकास को मिलेगा बढ़ावा**

क्षेत्रीय सत्रों में होगी क्षेत्र विशेष में निवेश पर विस्तृत चर्चा

क्षेत्र की संभावनाओं पर केंद्रित 5 क्षेत्रीय सत्र आयोजित किए जाएंगे। इनमें कृषि, खाद्य एवं डेयरी प्र-संस्करण, रक्षा, खनन एवं खनिज, कपड़ा एवं परिधान तथा पर्यटन शामिल है। उद्योग संघों, स्टार्टअप्स और रक्षा, कपड़ा एवं परिधान के विशेषज्ञों के साथ गोलमेज चर्चा भी होगी।

सम्मेलन में 300 से अधिक क्रेता-विक्रेता बैठकें और वन-टू-वन चर्चा भी होंगी। निवेशकों को महाकौशल का अनुभव प्रदान करने के लिए जबलपुर एक्सपो और रक्षा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेटवर्किंग डिनर के साथ होगा, जिसमें क्षेत्र की संस्कृति और व्यंजनों का प्रदर्शन किया जाएगा।

भोपाल में एडवेंचर लवर्स ने शुरू की मड चैलेंज प्रैक्टिस

सेफिया ग्राउंड और कलियासोत पर 20 से अधिक गाड़ियां रोजाना दौड़ रहीं

भोपाल (नप्र)। मानसून चल रहा है और शहर के एडवेंचर लवर्स अब मड चैलेंज के लिए तैयार हैं। इसको लेकर शहर के अनेक इलाकों में प्रतिभागियों ने प्रैक्टिस करना भी शुरू कर दी है।

सेफिया कॉलेज और कलियासोत ग्राउंड में रोजाना एडवेंचर लवर लगातार प्रैक्टिस कर रहे हैं। प्रतिभागी आतिफ ने बताया कि हम लगातार प्रैक्टिस कर रहे हैं। जल्द ही शहर में कई ईवेंट होने वाले हैं।

इसके लिए 25 से अधिक प्रतिभागी रोजाना प्रैक्टिस कर रहे हैं। इसमें जीप, जिप्सियों, थार के अलावा अन्य गाड़ियों से रोज प्रैक्टिस कर रहे हैं।

क्या होती है मड चैलेंज रैली

राजधानी समेत कई शहरों में मड चैलेंज रैली का आयोजन होता है। इस रैली में शामिल होने वाले प्रतिभागी पहाड़ी रास्तों पर कीचड़, पानी से सनी खराब मार्ग पर फोर-व्हील और बाइक से स्टंट के साथ अपनी रफ्तार को काबू करते हैं। मड चैलेंज रैली को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग भी पहुंचते हैं।

28 जुलाई को सीहोर में है प्रतियोगिता

28 जुलाई को सीहोर में सीजन की पहली मड चैलेंज प्रतियोगिता की जा रही है। इसमें भोपाल से 25 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे। इसके अलावा रायसेन और भोपाल में भी आयोजकों ने तैयारियां कर ली हैं। अगस्त में भी शहर में कई आयोजन होंगे।

मड कार रैली रोकने के लिए शिकायत

इधर, भोपाल और आसपास के जिलों में मड कार रैली को रोकने के लिए सोशल एक्टिविस्ट राशिद नूर खान ने कलेक्टर भोपाल से शिकायत की है। उन्होंने राष्ट्रीय हरित अधिकरण, प्रिंसिपल बेंच, नई दिल्ली के एक प्रकरण 832/2019 का हवाला दिया। कहा- यदि मड कार रैली को आपके कार्यालय द्वारा आयोजन की अनुमति दी जाती है तो निरीक्षण प्रतिवेदन लिखित शर्तों का पालन सुनिश्चित किया जाए।

नियम विरुद्ध बिना अनुमति आयोजित मड कार रैली में ट्रैफिक नियमों का उलंघन किया जाता है। इसमें पुराने वाहन और नाबालिग बच्चे शामिल होते हैं। इससे बड़ी दुर्घटना की आशंका रहती है। इन रैलियों का आयोजन करने वाले सोशल मीडिया से प्रचार करते हैं। इसमें कोई भी स्टेज या प्राइज नहीं होता। इनका उद्देश्य सिर्फ हुड़दंग करना होता है।

उन्होंने कहा- ऐसी गतिविधियों के कारण पर्यावरण एवं वन्य जीवों को नुकसान होता है। मानसून के समय डैम के किनारे (वेटलैंड) में शेड्यूल और संरक्षित जीवों के अंडे एवं प्रजनन काल का समय होता है। जिससे उन्हें नुकसान होता है।

लापता नाबालिग को शिवपुरी में जीआरपी ने ट्रेन से उतारा

राजगढ़ (नप्र)। राजगढ़ जिले के ब्यावरा से लापता हुआ 14 साल का बालक पुलिस को शिवपुरी में मिला, उसे जीआरपी पुलिस ने लोकेशन के आधार पर ट्रेन से उतारा है। पूछताछ के दौरान बालक ने बताया कि पढ़ाई से उसका मन भर चुका है। अब पंडा बनना चाहता हूं, इसलिए बिना किसी को बताए मथुरा जा रहा था।

बच्चे के मिलने की सूचना के बाद ब्यावरा सिटी पुलिस उसे शिवपुरी से ब्यावरा ले आई है। परिजनों को सौंप दिया है। ब्यावरा सिटी थाना प्रभारी वीरेंद्र धाकड़ ने बताया कि 17 जुलाई को ब्यावरा के आदर्श नगर में किराए से रहने वाले पवन कुमार पांडेय ने थाने पहुंचकर अपने 14 साल के बेटे आनन्द के अपहरण होने की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी, पुलिस को बच्चे के पिता पवन पांडेय ने बताया की वह सतना जिले के रहने वाले, कुछ महीनों से वहां ब्यावरा के आदर्श नगर में स्थित एक मकान में किराए से रहते हैं। वहां गुना रोड पर स्थित जोगीपुरा टोल पर सिक्योरिटी गार्ड का काम करते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि 14 साल का उनका बेटे आनन्द घर से लापता है, किसी ने उसका अपहरण कर लिया है। मामला बच्चे से जुड़ा होने के कारण पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज करते हुए बच्चे की तलाश शुरू की। तलाश करने के दौरान उसकी लोकेशन शिवपुरी की ओर मिली। पुलिस ने लोकेशन के आधार पर ब्यावरा पुलिस ने जीआरपी पुलिस को सूचना दी और बालक को शिवपुरी के रेलवे स्टेशन पर जीआरपी पुलिस ने ट्रेन से नीचे उतारा। बालक ने बताया कि पढ़ाई से उसका मन भर चुका है। उसकी इच्छा पंडा बनने की है इसलिए, वहां बिना बताए ट्रेन में बैठकर मथुरा जा रहा था।